वर्ष 6, अंक 12 | भोपाल, गुरुवार 24 जुलाई, 2025 | श्रावण कृष्ण पक्ष, अमावस्या, 2082 | मूल्य 2 रुपए

दैनिक कारखाने का सफर

बम-बम भोले की गूंज के साथ कांवड़ यात्रा समाप्त

15 दिन में 4.5 करोड़ श्रद्धालु पहुंचे हरिद्वार

दैनिक कारखाने का सफर। एजेंसी नई दिल्ली

उत्तराखंड का हरिद्वार बुधवार को 'हर हर महादेव' और 'बम बम भोले' के जयकारों से गूंज उठा। पखवाड़े भर चली कांवड़ यात्रा का समापन हो गया। लाखों श्रद्धालु सावन शिवरात्रि पर पवित्र नदी का जल लेने और शहर के शिव मंदिरों में जलाभिषेक करने के लिए गंगा तट पर उमड़ पड़े। मेला नियंत्रण कक्ष के सूत्रों के अनुसार, इस वर्ष कांवड़ यात्रा के दौरान गंगा जल लेने के लिए एक पखवाड़े के भीतर 4.5 करोड़ से अधिक श्रद्धालु हरिद्वार पहुंचे। कनखल क्षेत्र में स्थित दक्षप्रजापति महादेव मंदिर परिसर में भगवाधारी भक्तों का तांता लगा रहा, जिसे भगवान शिव का ससुराल माना जाता है। पौराणिक मान्यताओं के अनुसार, अपने ससुर राजा दक्ष को दिए वचन का पालन करते हुए, भगवान शिव पूरे श्रावण मास कनखल में निवास करते हैं। कनखल के अन्य शिवालयों, जैसे दरिद्र भंजन, तिलभांडेश्वर, बिल्वेश्वर, नीलेश्वर और गौरीशंकर मंदिरों में भी भक्तों की भारी भीड़ उमड़ी। हरिद्वार के जिलाधिकारी मयूर दीक्षित और वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक प्रमोद डोभाल ने भी अपने अधीनस्थ अधिकारियों के साथ हर की पौड़ी पर गंगा पूजा की। उन्होंने वहाँ से जल लेकर दक्ष मंदिर में जलाभिषेक किया और हर साल करोड़ों श्रद्धालुओं द्वारा आयोजित कांवड़ मेले के निर्विघ्न समापन के लिए भगवान शिव का आभार व्यक्त किया।

ईडी ने अल्केमिस्ट ग्रुप की 127 करोड़ की संपत्ति कुर्क की

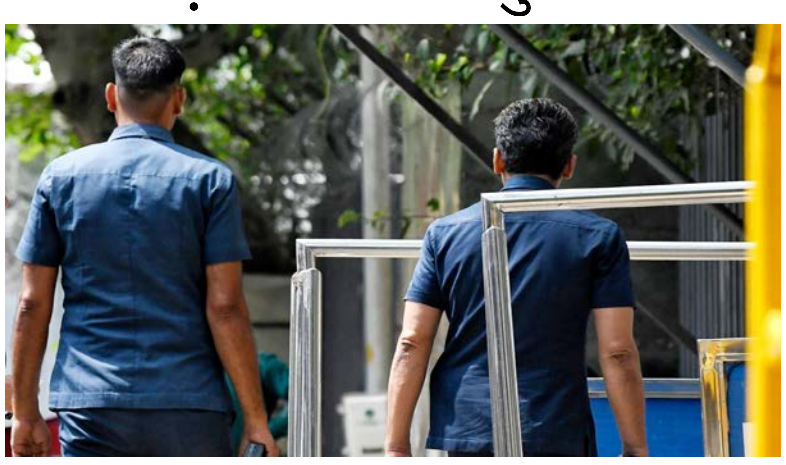

दैनिक कारखाने का सफर। एजेंसी नई दिल्ली

ईडी ने अल्केमिस्ट ग्रुप से जुड़ी मनी लॉन्ड्रिंग जांच में 127.33 करोड़ रुपये के शेयर अस्थायी रूप से कुर्क किए हैं। कुर्क की गई संपत्तियां अल्केमिस्ट हॉस्पिटल और ओजस हॉस्पिटल के नाम पर हैं और पंचकुला, हरियाणा में स्थित हैं। ईडी ने कहा है कि कुर्क की गई संपत्ति का लाभार्थी मालिक करण दीप सिंह है। करण दीप सिंह तृणमूल कांग्रेस (टीएमसी) के पूर्व सांसद और व्यवसायी कंवर दीप सिंह के बेटे है। ईडी ने बुधवार को यह जानकारी दी। ईडी ने बताया कि यह मामला कथित तौर पर 1,900 करोड़ रुपये की पोंजी योजना धोखाधड़ी से जुड़ा है। धन शोधन का यह मामला कोलकाता पुलिस और केंद्रीय अन्वेषण ब्यूरो (सीबीआई) द्वारा अलकेमिस्ट टाउनशिप, अलकेमिस्ट इंफ्रा रियल्टी और अलकेमिस्ट समूह के निदेशकों समेत कंवर दीप सिंह के खिलाफ दर्ज प्राथमिकी के आधार पर किया गया। आरोपियों पर सामूहिक निवेश योजनाओं के माध्यम से अवैध रूप से 1,848 करोड़ रुपये जुटाने के लिए बड़े पैमाने पर आपराधिक षड्यंत्र रचने का आरोप लगाया गया था। आरोपियों ने कथित रूप से निवेशकों को अधिक 'रिटर्न' की पेशकश कीथी या उन्हें भूखंड, फ्लैट और विला आवंटित करने का झूठा वादा किया गया था। कंवर दीप सिंह को 2021 में ईडी ने गिरफ्तार किया था। धन शोधन विरोधी संघीय जाँच एजेंसी ने एक अभियोजन शिकायत और बाद में एक पूरक अभियोजन शिकायत दर्ज की है। धन शोधन जाँच से पता चला है कि, "धोखाधड़ीपूर्ण सामूहिक निवेश योजनाओं (सीआईएस) के माध्यम से अवैध रूप से धन जुटाकर, असामान्य रूप से उच्च रिटर्न की पेशकश करके, और/या प्लॉट, फ्लैट और विला आवंटित करने के झूठे वादे करके निवेशकों को धोखा देने की आपराधिक साजिश रची गई थी। इन भ्रामक निवेश योजनाओं के माध्यम से, मेसर्स अल्केमिस्ट होल्डिंग्स लिमिटेड और मेसर्स अल्केमिस्ट टाउनशिप इंडिया लिमिटेड ने गैर-संदेहास्पद निवेशकों से लगभग 1,848 करोड़ रुपये अवैध रूप से एकत्र किए और बाद में अनधिकृत उद्देश्यों के लिए धन का दुरुपयोग किया," ईडी ने कहा।

जाँच एजेंसी ने कहा कि "धन की उत्पत्ति को छिपाने" के इरादे से अल्केमिस्ट समूह की समूह संस्थाओं से जुड़े जटिल वित्तीय लेनदेन के माध्यम से "दुरुपयोग किए गए धन" को "व्यवस्थित रूप से स्तरित" किया गया था। अधिकारियों ने कहा, "इस दूषित आय का उपयोग अंततः शेयरों के अधिग्रहण और उसके बाद अल्केमिस्ट अस्पताल तथा ओजस अस्पताल के निर्माण के लिए किया गया।"

पीएम मोदी यूके पहुंचे, भारत और ब्रिटेन ऐतिहासिक मुक्त व्यापार समझौते पर करेंगे हस्ताक्षर

दैनिक कारखाने का सफर। एजेंसी नई दिल्ली

भारत और यू.के. गुरुवार (24 जुलाई, 2025) को लंदन में एक मुक्त व्यापार समझौते पर हस्ताक्षर करेंगे, जिससे श्रम-प्रधान उत्पादों जैसे चमड़ा, जूते और कपड़ों का रियायती दरों पर निर्यात संभव होगा, जबकि ब्रिटेन से व्हिस्की और कारों का आयात सस्ता हो जाएगा। ब्रिटेन की सरकार ने बृहस्पतिवार को भारत के साथ ऐतिहासिक समझौते को औपचारिक रूप देने से कुछ समय पहले कहा कि भारत-ब्रिटेन मुक्त व्यापार समझौते (एफटीए) से द्विपक्षीय व्यापार में सालाना लगभग 34 अरब डॉलर की वृद्धि होगी। यूरोपीय संघ (ईयू) से हटने के बाद भारत के साथ इस समझौते को ब्रिटेन के लिए सबसे अधिक आर्थिक रूप से महत्वपूर्ण द्विपक्षीय व्यापार समझौता बताया जा रहा है। इस एफटीए पर प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी और उनके ब्रिटिश समकक्ष केअर स्टार्मर की उपस्थिति में हस्ताक्षर किए जाएंगे। दोनों देशों के प्रधानमंत्री तेजी से बदलते वैश्विक दौर में अपनी साझेदारी को नयी ऊंचाइयों पर ले जाने के लिए 'यूके-भारत विजन 2035' का भी अनावरण करेंगे। ब्रिटेन ने कहा कि भारतीय उपभोक्ताओं को शीतल पेय और सौंदर्य प्रसाधनों से लेकर गाड़ियों और चिकित्सा उपकरणों तक, उत्कृष्ट ब्रिटिश उत्पादों तक बेहतर पहुंच का लाभ मिलेगा क्योंकि एफटीए लागू होने के बाद औसत शुल्क 15 प्रतिशत से घटकर तीन प्रतिशत हो जाएगा। ब्रिटेन ने एक बयान में कहा कि वह पहले से ही भारत से 11 अरब पाउंड का सामान आयात करता है, लेकिन भारतीय वस्तुओं पर उदार शुल्क ब्रिटिश उपभोक्ताओं और व्यवसायों के लिए भारतीय उत्पाद खरीदना आसान और सस्ता बना देंगे और ब्रिटेन में भारतीय सामान के निर्यात को बढ़ावा देंगे। स्टार्मर ने कहा, ''भारत के साथ हमारा ऐतिहासिक व्यापार समझौता ब्रिटेन के लिए एक बड़ी जीत है।

विकासकार्यों की समीक्षा की, सरयू सरोवर पार्क की मरम्मत और असामाजिक तत्वों पर कार्रवाई करने के निर्देश

जनहित के कार्य समयसीमा में पूर्ण कराएं अधिकारी : राज्यमंत्री कृष्णा गौर

दैनिक कारखाने का सफर। भोपाल

पिछड़ा वर्ग एवं अल्पसंख्यक कल्याण राज्यमंत्री (स्वतंत्र प्रभार) कृष्णा गौर ने बुधवार को मंत्रालय में वार्ड 65 और 68 के विकास कार्यों की समीक्षा की। बैठक में उन्होंने अधिकारियों को सख्त निर्देश दिए कि जनहित से जुड़े सभी कार्य निर्धारित समयसीमा में पूर्ण किए जाएं। उन्होंने स्पष्ट कहा कि अधूरे कार्यों के कारण आमजन को असुविधा होती है, जिसे किसी भी स्थिति में नजरअंदाज नहीं किया जा सकता।

अधूरे कार्य जल्द पूर्ण करने के निर्देश : राज्यमंत्री गौर ने आईटीआई रहवासी परिसर, गौतम नगर बस्ती, गायत्री नगर समेत अनेक कॉलोनियों के विकास कार्यों का प्राक्कलन शीघ्र तैयार कर प्रस्तुत करने के निर्देश दिए। उन्होंने क्षेत्र में नियमित साफ-सफाई, डोर-टू-डोर कचरा संग्रहण, नालियों की सफाई, विद्युत पोलों की शिफ्टिंग और अतिरिक्त ट्रांसफार्मरों की स्थापना कर स्ट्रीट लाइट व्यवस्था सुधारने पर बल दिया। सरयू सरोवर पार्क का सौंदर्यीकरण और असामाजिक तत्वों पर कार्रवाई होगी। राज्यमंत्री गौर ने सरयू सरोवर पार्क की बदहाल स्थिति पर नाराजगी जताते हुए कहा कि पार्क में खराब फव्वारे और झूलों की मरम्मत शीघ्र कराई जाए। पाथवे निर्माण, पार्क का समुचित रख-रखाव, हाईमास्ट लाइट की व्यवस्था एवं वाचनालय की बाउंड्रीवाल निर्माण कार्य शीघ्र शुरू करने के निर्देश दिए गए। इसके साथ ही अयोध्या नगर क्षेत्र में बंद पड़ी स्ट्रीट लाइटों का सर्वे कर उन्हें पुनः चालू करने के निर्देश भी दिए। मार्ग मैं अवैध रूप से लगाई गई जालियों को तत्काल हटाकर दुर्घटनाओं की आशंका को समाप्त करने की आवश्यकता पर बल दिया गया। बैठक में लव कुश यादव, पार्षद शिरोमणि शर्मा, उर्मिला मौर्य समेत कई जनप्रतिनिधि मौजूद रहे।

चिराग पासवान के सुरों में घुली राजनीतिक मिश्री! बोले- बिहार की पॉलिटिक्स में ईमानदार भूमिका निभा रहे प्रशांत किशोर

दैनिक कारखाने का सफर। एजेंसी नई दिल्ली

लोक जनशक्ति पार्टी (रामविलास) के अध्यक्ष चिराग पासवान ने बुधवार को कहा कि वह बिहार की राजनीति में प्रशांत किशोर द्वारा निभाई जा रही ''ईमानदार भूमिका'' की सराहना करते हैं, क्योंकि जो भी जाति, पंथ या धर्म के बारे में नहीं, बल्कि राज्य के बारे में सोचता है, उसका वहां स्वागत है। प्रशांत किशोर जन सुराज पार्टी के संस्थापक हैं। जब पासवान से किशोर द्वारा उनके बिहार पहले, बिहारी पहले के नारे को 'हाईजैक' करने के बारे में पूछा गया, तो उन्होंने कहा कि कोई भी दूसरे के एजेंडे को 'हाईजैक' नहीं कर सकता। उन्होंने कहा, प्रशांत जी बिहार की राजनीति में एक ईमानदार भूमिका निभा रहे हैं, जिसकी मैं सराहना करता हूं। पासवान ने कहा कि वह उन सभी का स्वागत करते हैं जो धर्म, जाति और पंथ के मुद्दों से ऊपर उठकर बिहार और राज्य के लोगों की प्रगति के लिए काम करना चाहते हैं। लोजपा (आर) अध्यक्ष ने कहा कि लोकतंत्र की खूबसूरती यही है कि लोगों के पास चुनने के लिए इतने सारे विकल्प होते हैं। उन्होंने चुटकी लेते हुए कहा, "लोकतंत्र में, कई विकल्प होना बेहतर है।" प्रशांत किशोर ने जन सुराज पार्टी की स्थापना की है, जबकि चिराग पासवान की लोजपा (रामविलास) जनता दल (यूनाइटेड) और भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) के साथ राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन (राजग) का एक घटक दल है।

दैनिक कारखाने का सफर अखबार का संपादकीय कार्यालय
गोबिंद टॉवर, क्वालिटी रेस्टोरेंट के पास, एसबी स्टूडियों के ऊपर पिपलानी पेट्रोल पंप के पास, सोनागिरी चौराहा रायसेन रोड भेल भोपाल। मोबाइल नंबर: 9826035849, 9425006706

सहजता सरलता और समता जीवन की अमर ज्योति : मुनि निर्वेग सागर महाराज

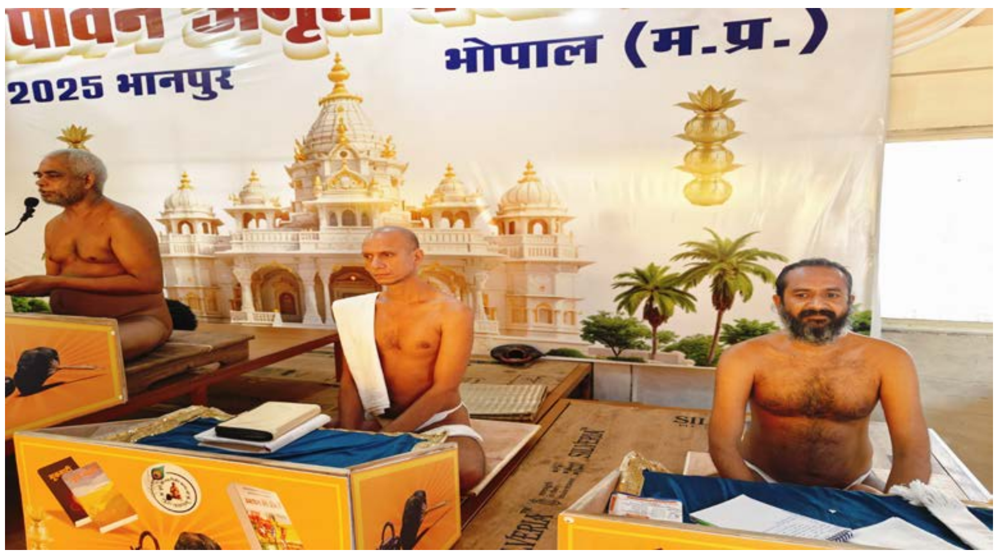

दैनिक कारखाने का सफर। भोपाल

श्री पार्श्वनाथ जैन मंदिर भानपुर मे मुनि श्री निर्वेग सागर महाराज के सा संघ सानिध्य में चातुर्मास के दौरान भक्ति रस की गंगा बह रही है। भगवान पार्श्वनाथ का अभिषेक अष्ट द्रव्यों से पूजा अर्चना के साथ धार्मिक अनुष्ठान हो रहे हैं। प्रवक्ता अंशुल जैन ने बताया पाठशाला के बच्चों द्वारा गुरु वंदना की गई। मुख्य कलश पुण्यार्जक परिवार प्रदीप जैन, प्रवीण लीना रेंडुयू परिवार जीतेश आभा परिवार ने श्री फल अर्पित कर आशीर्वाद लिया। मंदिर समिति के अध्यक्ष संदीप जैन बंसिया चातुर्मास समिति के अध्यक्ष धर्मचंद जैन ने मुनि संघ के कर कमलों में शास्त्र भेंट किए। मुलीचे निर्भीक सागर महाराज ने कहा वर्तमान में भागम भाग की इस दुनिया में हर इंसान दुखी है और स्वयं को स्वयं में उलझा कर परेशान हो रहा है। ऐसे समय में सहजता सरलता और समता जीवन की अमर ज्योति है। स्वयं संतुलित रहकर जीवन को सात्विक ढंग से जिए और आत्म कल्याण में लगकर जीवन का मोक्ष मार्ग सुनिश्चित करें। मुनि श्री ने कहा भारत में अध्यात्म से बढ़कर शक्ति कुछ नहीं है। अध्यात्म की शक्ति को आज दुनिया आत्मसात कर रही है, हमारी संस्कृति संस्कार और अध्यात्म को आज दुनिया के सभी देश मानकर चल रहे हैं। इस अवसर पर मंदिर समिति के अध्यक्ष संदीप जैन बंसिया, चातुर्मास समिति के अध्यक्ष धर्मचंद जैन, रमेश जैन, पाल जैन, इंद्र जैन डब्बू, मनीष जैन, वेध कुमार जैन, प्रदीप जैन, वीरेंद्र जैन, अमित जैन, महेंद्र जैन, गबर जैन महिला मंडल की सविता, अनीता, नेहा, भारती, आभा, नीतू, सारिका, रश्मि, मीनू, संगीता सहित शहर की विभिन्न मंदिर समितियां के अध्यक्ष एवं पदाधिकारी भानपुर मौजूद थे।

रामकृष्ण कुसमारिया पिछड़ा वर्ग कल्याण आयोग के अध्यक्ष बने

दैनिक कारखाने का सफर। भोपाल

इससे पहले 13 दिसंबर 2023 को डॉ. रामकृष्ण कुसमारिया ने मप्र राज्य पिछड़ा वर्ग आयोग के अध्यक्ष का पदभार ग्रहण किया था। पूर्व सांसद और पूर्व मंत्री डॉ. रामकृष्ण कुसमारिया को मप्र पिछड़ा वर्ग कल्याण आयोग का अध्यक्ष बनाया गया है। इस आयोग में पूर्व मंत्री गौरीशंकर बिसेन की बेटी मौसम बिसेन को सदस्य बनाया गया है।
बता दें, मप्र पिछड़ा वर्ग कल्याण आयोग का गठन सितंबर 2021 में हुआ था। 2 सितंबर 2021 को जारी अधिसूचना के अनुसार इस आयोग का कार्यकाल दो साल के लिए तय किया गया था और आवश्यकता अनुसार कार्यकाल बढ़ाने की बात कही गई थी।
इससे पहले 3 सितंबर 2021 को पूर्व मंत्री गौरीशंकर बिसेन को मप्र पिछड़ा वर्ग कल्याण आयोग का अध्यक्ष बनाया गया था। रामकृष्ण कुसमारिया इस आयोग के दूसरे अध्यक्ष हैं। पूर्व मंत्री गौरीशंकर बिसेन जिस आयोग के अध्यक्ष रहे उनकी बेटी को उसी आयोग में सदस्य बनाया गया है।
मप्र में ओबीसी वर्ग के दो-दो आयोग हैं। मप्र राज्य पिछड़ा वर्ग आयोग का गठन 1993 में किया गया था। कमलनाथ सरकार में वरिष्ठ अधिवक्ता जेपी धनोपिया को साल 2020 में मप्र राज्य पिछड़ा वर्ग आयोग का अध्यक्ष बनाया गया था। लेकिन बाद में कमलनाथ सरकार गिर गई। हालांकि धनोपिया का कार्यकाल पूरा नहीं हुआ था ऐसे में वे कोर्ट चले गए। इधर, मप्र में ओबीसी को 27% आरक्षण देने का मामला भी कोर्ट पहुंच गया। इसके बाद सितंबर 2021 में तत्कालीन सीएम शिवराज सिंह चौहान ने मप्र पिछड़ा वर्ग कल्याण आयोग का गठन कर गौरीशंकर बिसेन को अध्यक्ष बनाया और कोर्ट में ओबीसी को 27% की रिपोर्ट पेश की। मप्र में 2023 के विधानसभा चुनाव की आचार संहिता लागू होने से पहले 6 अक्टूबर 2023 को डॉ रामकृष्ण कुसमारिया को राज्य पिछड़ा वर्ग आयोग का अध्यक्ष बनाया था। हालांकि उन्होंने विधानसभा चुनाव के परिणाम घोषित होने के बाद दिसंबर में पदभार ग्रहण किया था। ओबीसी विभाग के अधिकारियों का कहना है कि दोनों आयोगों के काम अलग हैं। डॉ रामकृष्ण कुसमारिया दोनों आयोगों के अध्यक्ष हैं।

सावन में पीहर की याद सताती है

शिक्षा मंच समूह भोपाल की ओनलाइन गोष्ठी सम्पन्न हुई

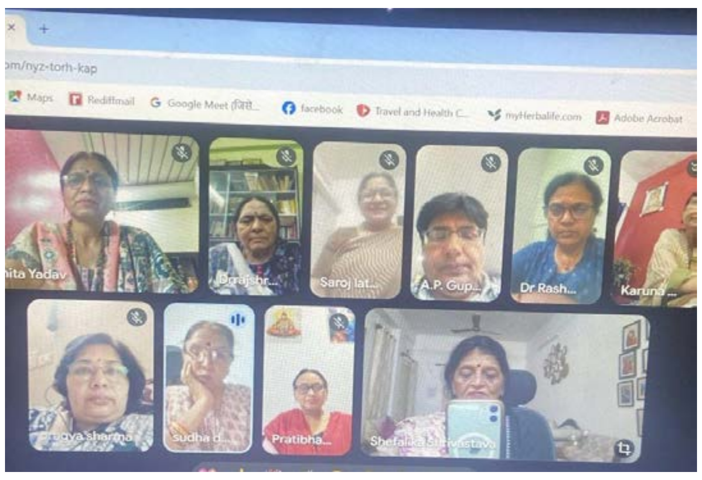

दैनिक कारखाने का सफर। भोपाल

मध्यप्रदेश के शिक्षक व शिक्षिकाओं द्वारा शिक्षा मंच समूह पर प्रतिमाह ओनलाइन गोष्ठी सम्पन्न होती है ,इस माह की गोष्ठी उत्तरप्रदेश की अध्यक्ष डॉक्टर रश्मि श्रीवास्तव के मुख्य आतिथ्य में और शिक्षा मंच समूह भोपाल की अध्यक्ष डॉ राजश्री रावत की अध्यक्षता में गोष्ठी सम्पन्न हुई। सरस्वती वंदना प्रतिभा द्विवेदी ने संचालन सुधा दुबे व आभार सुनीता यादव ने प्रस्तुत किया।
रचनापाठ करते हुये गोष्ठी में
पावस व सावन के गीत पढ़े गये। सुनीता यादव ने पढ़ा
सावन में पीहर की याद सताती है।
अम्मा औ सखियाँ सपने में आतीं हैं।
प्रमिला झरवाड़े
अंतर्मन के लघु आँगन में, सुरमय गीत सजाऊँ मैं
शब्दों से अगवानी करके, धड़कन ताल बजाऊँ मैं
सजा रखा संगीत हिया में,उसको नित्य सुनाऊँ मैं।
शेफालिका श्रीवास्तव ने
आया सावन का त्यौहार,
झूला पड गये अंबुवा की डार सखियाँ गाये गीत मल्हार ,
आया सावन का त्यौहार ।
प्रज्ञा शर्मा ने
“मौसम और मैं” कविता से रचनापाठ किया -
हर मौसम कुछ कह जाता है,
जीवन का भाव समझा जाता है।
सावन की बूँदें जब बरसें,
मन का सूना आँगन भी हँसें।

सुधा दुबे
श्रृंगारित सुरभित हुआ, धवल नील आकाश।
मोती झर झर झर रहे, बुझी धारा की प्यास।।
प्रतिभा द्विवेदी ने सुमधुर गीत घिर काले मेघ आए,बूंदों ने सुर सजाये
बिखरें हैं रंग चहुँओर, मन डूब -डूब जाये
डॉ प्रतिभा द्विवेदी
सरोजलता सोनी
पावस में प्रकृति रानी का,
यह कैसा अद्भुत श्रृंगार।
भाँति - भाँति के रूप बदलती ,
करती है सोलह श्रृंगार।। ।।
करूणा श्रीवास्तव ने पढ़ा
सावन की आई बहार,सखी मेरा मन हर्षाए
रिमझिम पड़त फुहार
सखी मेरा मन ,हर्षाए ।।
राजश्री रावत ने गीत पढ़ा सावन की छाई घटा, घनघोर,
निरखते ही नैना हो गए विभोर।
कार्यक्रम में सीहोर से आदित्य हरि गुप्ता भी उपस्थित रहे।

समकालीन लघुकथा में तकनीकी के बढ़ते दखल को रेखांकित करना जरूरी -सुनीता आंभोरे

दैनिक कारखाने का सफर। भोपाल

‘समकालीन लघुकथा में तकनीक के बढ़ते दखल को रेखांकित करना आज की बड़ी जरूरत है | वर्तमान लघुकथाकार अपने समय एवं परिवेश पर आधारित लघुकथा लिखकर पाठकों के हृदय तक पहुंच सकते हैं | ‘ यह उदगार हैं साहित्यकार सुनीता आंभोरे मुंबई (महाराष्ट्र)के जो लघुकथा शोध केंद्र समिति भोपाल द्वारा आयोजित अपने साप्ताहिक ऑन लाइन बुधवारीय आयोजन में वरिष्ठ लघुकथाकार डॉ शील कौशिक ,सिरसा (हरियाणा) की लघुकथाओं पर मुख्य वक्ता के रूप में बोल रही थी | कार्यक्रम के आरम्भ में केंद्र के सचिव घनश्याम मैथिल अमृत ने अपना आधार वक्तव्य देते हुए स्वागत उद्बोधन दिया ,तत्पश्चात शेफालिका श्रीवास्तव के संचालन में लघुकथा गोष्ठी आरम्भ हुई जिसमें डॉ शील कौशिक ने बदलती प्रश्नावली,उठते धुएं की गंध, छुटकारा, क्यू आर कोड,और छूटा हुआ सामान लघुकथाओं का वाचन किया | इन समसामयिक विविध वर्णी लघुकथाओं पर डॉ मिथलेश अवस्थी नागपुर, डॉ आदर्श प्रकाश ,जम्मू, श्रीमती अनीता रश्मि रांची ने भी लघुथाओं के शीर्षक ,कथ्य ।और शिल्प पर महत्वपूर्ण टिप्पणियां प्रस्तुत की ,इस आयोजन में देश विदेश के अनेक लघुकथा लेखक एवं पाठक उपस्थित थे ,कार्यक्रम के अंत में लघुकथाकार डॉ शील कौशिक ने केंद्र का आभार प्रकट किया |

सीएम हेल्पलाइन रैंकिंग में सारंगपुर नगरपालिका ने मारी बाजी, जिले में हासिल किया प्रथम स्थान

दैनिक कारखाने का सफर। सारंगपुर

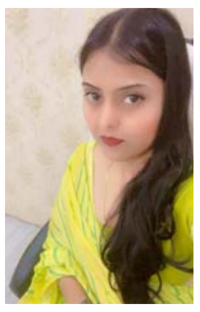

नगर पालिका सारंगपुर ने मुख्यमंत्री हेल्पलाइन रैंकिंग में उत्कृष्ट प्रदर्शन करते हुए जिले में पहला स्थान प्राप्त किया है। 21 जुलाई को जारी हुई ताज़ा रैंकिंग में सारंगपुर नगरपालिका ने जिले की अन्य 14 नगरपालिकाओं को पछाड़ते हुए 100 A प्रतिशत वेटेज स्कोर के साथ प्रथम स्थान अर्जित किया।नगरपालिका की यह उपलब्धि हाल ही में मुख्य नगरपालिका अधिकारी के रूप में पदभार संभालने वाली ज्योति सुनहरे के नेतृत्व में संभव हो सकी। पदभार ग्रहण करते ही उन्होंने नगर पालिका की समस्त शाखाओं में लंबित सीएम हेल्पलाइन शिकायतों के समाधान को प्राथमिकता दी।
शिकायतों में प्रमुख रूप से स्ट्रीट लाइट सुधार, नाली सफाई, सड़क मरम्मत तथा पेयजल आपूर्ति संबंधी समस्याएं शामिल थीं।
सीएमओ ज्योति सुनहरे ने इन समस्याओं को गंभीरता से लेते हुए संबंधित विभागों के माध्यम से त्वरित कार्यवाही करवाई और दर्जनों लंबित शिकायतों का समाधान कर उन्हें बंद भी करवाया। इस प्रभावी कार्यप्रणाली का ही परिणाम रहा कि सारंगपुर नगरपालिका को जिले में शीर्ष स्थान प्राप्त हुआ।जिले में प्रथम स्थान प्राप्त करने पर मुख्य नगरपालिका अधिकारी ज्योति सुनहरे ने नगर पालिका के सभी कर्मचारियों को बधाई देते हुए कहा कि यह सफलता सभी की सामूहिक मेहनत और जनसेवा के प्रति प्रतिबद्धता का परिणाम है। उन्होंने आगे भी इसी समर्पण के साथ कार्य करते रहने का आह्वान किया। इस उल्लेखनीय उपलब्धि से न केवल सारंगपुर नगर का गौरव बढ़ा है, बल्कि प्रदेश स्तर पर भी नगर पालिका की सकारात्मक पहचान बनी है।

अ. भा. क्षत्रिय लोणारी कुनबी समाज महिला मोर्चा के तत्वाधान में हरियाली तीज का आयोजन 27 को

दैनिक कारखाने का सफर। भोपाल। भोपाल

अखिल भारतीय क्षत्रिय लोणारी कुनबी समाज महिला मोर्चा के तत्वाधान में अनुष्ठान एवं हरियाली तीज का कार्यक्रम दिनांक 27 जुलाई दिन रविवार समय 11 बजे से बरखेड़ा भेल भोपाल में आयोजित किया जाएगा। महिला मोर्चा की जिला अध्यक्ष दिव्या अडलक ने बताया कि सावन में महा उत्सव हरियाली तीज का कार्यक्रम आयोजित किया गया, महिला मोर्चा ने भजन कीर्तन, हवन पूजन का कार्यक्रम आयोजित किया जाएगा। जिस मे महिलाओ का ड्रेस कोड हरी साड़ी रखा गया है। महिला मंडल आयोजन समिति में शामिल हुईं, रीता वाघमारे, मालती साद, सारिका राने, दुर्गा चिल्हाटे, रंजना लिखितकर, गीता मगरदे, रीता वागद्रे, सरिता धोटे, प्रीति देशमुख, शशि साबले, पुनम लिखितकर, उषा भुजाडे, प्रमीला लोखणडे, सरिता चढोकर, मानशी डागे, अनिता बारस्कर, अलका पाटनकर, सीमा खाडे, कंचन लिखितकर, रेशमा लिखितकर, डिम्पल लिखितकर, नेहा फोटोफोडे, सुधा मगरदे, अर्चना वागद्रे, संगीता धोटे, नीलू देव, तृप्ति मस्की, नमिता साबले, डॉ. करुणा पांडाग्रे, सोनल बारस्कर, प्रेरणा वागद्रे, अर्चना ठाकरे व्दारा कार्यक्रम संपन्न होगा। कार्यक्रम में समस्त समाज की माता बहने सादर आमंत्रित है।

समाज सुधारक और देशभक्ति की मिसाल को श्रद्धांजलि अर्पित

दैनिक कारखाने का सफर। भोपाल। भोपाल

लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक एवम् चंद्रशेखर आजाद जी की जयंती पर हम सब एकत्रित होकर एक महान स्वतंत्रता सेनानी, समाज सुधारक और देशभक्ति की मिसाल को श्रद्धांजलि अर्पित कर रहे हैं। उन्होंने "स्वराज मेरा जन्मसिद्ध अधिकार है और मैं इसे लेकर रहूंगा" जैसे ओजस्वी नारे से देशवासियों में आज़ादी की अलख जगाई। श्रमिक नेता दीपक गुप्ता ने बाल गंगाधर तिलक और चंद्रशेखर आजाद की प्रतिमा पर माल्यार्पण कर कहा कि उनका जीवन समर्पण, साहस और राष्ट्रप्रेम का प्रतीक है। तिलक जी ने न केवल अंग्रेजी हुकूमत के खिलाफ आवाज़ उठाई, बल्कि भारतीय संस्कृति, शिक्षा और आत्मसम्मान को भी मज़बूती दी। आज उनकी जयंती पर हमें उनके विचारों को आत्मसात करने, एकजुट होकर देश के निर्माण में योगदान देने और युवा पीढ़ी को प्रेरित करने का संकल्प लेना चाहिए।

चंद्रशेखर आज़ाद की जयंती पर हम सब एकत्रित होकर भारत माता के इस वीर सपूत को श्रद्धांजलि अर्पित करते हैं। उनका जीवन साहस, राष्ट्रभक्ति और बलिदान की अद्वितीय मिसाल है। आज़ाद ने अपने प्राणों की आहुति देकर स्वतंत्रता संग्राम की लौ को प्रज्वलित रखा और अंग्रेज़ी शासन को चुनौती दी। हमारा यह समागम केवल एक आयोजन नहीं, बल्कि एक संकल्प है कि हम उनके आदर्शों पर चलकर एक सशक्त, स्वाभिमानी और आत्मनिर्भर भारत का निर्माण करेंगे। आज के दिन हम यह भी प्रण लेते हैं कि देश की एकता, अखंडता और स्वतंत्रता के लिए सदैव समर्पित रहेंगे। "वो आज़ाद थे, आज़ाद हैं, और आने वाली पीढ़ियों के लिए प्रेरणा बनकर हमेशा जीवित रहेंगे।"

भारतीय मजदूर संघ के 70वें वर्ष की कार्ययोजना का समापन समारोह आयोजन किया गया

दैनिक कारखाने का सफर। भोपाल। भोपाल

भारतीय मजदूर संघ के 70वें वर्ष की कार्ययोजना अनुरूप मध्य प्रदेश इकाई द्वारा सभी कार्यक्रमो का क्रियान्वयन किया गया। प्रदेश कार्यालय ठेंगडी भवन भोपाल में 70वे वर्ष के कार्यक्रमों का समापन समारोह का आयोजन किया, जिसमे दिल्ली में अखिल भारतीय स्तर पर आयोजित कार्यक्रम के लाइव प्रसारण में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सरसंघचालक मोहन भागवत का प्रबोधन श्रवण करने हेतु सैंकड़ो कार्यकर्ता उपस्थित रहे। भोपाल जिले में आयोजित कार्यक्रम में भारतीय जनता पार्टी मप्र के प्रदेश अध्यक्ष हेमंत खंडेलवाल, प्रदेश संगठन हितानंद शर्मा, क्षेत्रीय विधायक भगवान दास सबनानी, राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के मध्य भारत प्रान्त के प्रांत सहकार्यवाह सन्तोष मीणा, प्रान्त सेवा प्रमुख विक्रम सिंह, प्रवासी आयोग के पूर्व सदस्य विनोद रिछारिया, बीएमएस के प्रदेश मंत्री राजन नायर, प्रदेश मीडिया प्रभारी कमलेश नगपुरे, जिला मंत्री श्री रघुराज सिंह दांगी सहित भोपाल जिले सैंकड़ो गणमान्य कार्यकर्ता उपस्थित रहे।

दादाजी धाम मंदिर में सावन शिवरात्रि पर रुद्राभिषेक, रुद्राक्ष का पौधे का रोपण किया गया

दैनिक कारखाने का सफर। भोपाल। भोपाल

दादाजी धाम मंदिर रायसेन रोड पटेल नगर में बुधवार को सावन शिवरात्रि के शुभ अवसर पर श्री दादाजी गुरुदेव की पत्नी राधा नामदेव, बड़े पुत्र एवं श्री श्री 1008 श्री दादाजी गुरुदेव चैरिटेबल ट्रस्ट के अध्यक्ष शिवरतन नामदेव पत्नी अर्चना नामदेव ट्रस्टी, पुत्री अनन्या नामदेव, श्वेता पलिया यजमान को पंडित राजेन्द्र पलिया द्वारा विधि विधान से रुद्राभिषेक कराया गया। इसके पश्चात मंदिर प्रांगण में रुद्राक्ष के पौधे का रोपण किया गया उपस्थित सभी भक्तों ने पुण्य लाभ प्राप्त किया। सावन मास में भक्तों द्वारा प्रतिदिन दादाजी धाम मंदिर में रुद्राभिषेक किये जा रहे हैं।सावन मास के कृष्ण पक्ष की चतुर्दशी तिथि 23 जुलाई बुधवार को शिवरात्रि पर भगवान शिव की उपासना और पूजन का अक्षय लाभ मिलता है। भगवान शिव अपने भक्तों से प्रसन्न होते हैं। सावन की शिवरात्रि को भगवान शिव और माता पार्वती के दोबारा से मिलने का प्रतीक माना जाता है। इस दिन शिव और पार्वती के पूजन से अखंड सौभाग्य और वैवाहिक जीवन का आशीर्वाद मिलता है।

ब्रिक्स मानों व्हाट्सएप समूह!

जब गोल्डमैन सैक्स ने 2001 में "ब्रिक्स (BRICs)" शब्द गढ़ा था, तब यह कोई ठोस संगठन नहीं था, बस, उभरती अर्थव्यवस्थाओं—ब्राज़ील, रूस, भारत और चीन—के जमवाड़े का एक कल्पनाशील, आकर्षक संक्षिप्त नाम था। पर दुनिया ने उसे भविष्य की आर्थिक ताक़त के रूप में देखा। लेकिन 2009 तक आते-आते यह शब्द आर्थिकी, आँकड़ों की ताकत का नहीं रहा, बल्कि राजनीतिक रंग लेने लगा। और जब इसमें दक्षिण अफ्रीका शामिल हुआ, तो ब्रिक्स (BRICS) एक वास्तविक मंच बन गया—पाँच अलग भूगोल, पाँच अलग आवाज़ें, पर एक साझा ख्याल कि एक ऐसी वैश्विक व्यवस्था बने जो केवल पश्चिम के इर्द-गिर्द न घूमे। वक़्त भी अनुकूल था। बहुध्रुवीयता (Multipolarity) अब केवल वैकल्पिक कल्पना नहीं थी। पश्चिम, 2008 की आर्थिक मंदी से उबरने की कोशिश में था, चिंता व आत्मनिरीक्षण में खोया हुआ था। वहीं ये नई अर्थव्यवस्थाएँ आत्मविश्वास के साथ मंच पर आ रही थीं—बढ़ती जीडीपी (GDP), तेज़ होती आवाज़ें, और वैश्विक निर्णयों में हिस्सेदारी की माँग के साथ। बाते और शब्दावली भव्य थी, तस्वीरें दमदार। ब्रिक्स (BRICS) ने अपनी समिट कैलेंडर तय किया, न्यू डेवलपमेंट बैंक (New Development Bank) जैसी संस्थाएं खड़ी कीं, साझा करेंसी और वैकल्पिक रेटिंग एजेंसी (Rating Agency) जैसे विचारों पर चर्चा की। कुछ वर्षों तक लगा मानो यह समूह सिर्फ बढ़ नहीं रहा, बल्कि अपनी एक नयी वैश्विक पहचान बना रहा है। लेकिन अब 2025 तक आते-आते यह तस्वीर धुंधली हो गई है। अब ब्रिक्स (BRICS) ने विस्तार कर ब्रिक्स प्लस (BRICS+) का रूप ले लिया है—11 सदस्य और कई और कतार में खड़े। मिस्र, ईरान, इथियोपिया, यूएई, इंडोनेशिया जैसे नए नाम इसमें शामिल हैं। कुल मिलाकर, यह समूह अब दुनिया की आधे से अधिक आबादी और जी-7 (G7) से अधिक 20 ट्रिलियन डालर अधिक जीडीपी का समूह है। पर नया एक गंभीर सवाल आ खड़ा हुआ है। मुद्दा यह यह नहीं है कि ब्रिक्स (BRICS) कितना बड़ा हुआ है, बल्कि यह है कि क्या वह एकजुट हुआ है? सदस्य देशों के बीच दरारें अब छिपी नहीं हैं। भारत और चीन—दो प्रमुख स्तंभ—अब भी सीमा विवाद में उलझे हैं। रूस का यूक्रेन युद्ध इस समूह की स्थिरता की छवि को झकझोर चुका है। ब्राज़ील की विदेश नीति सत्ता परिवर्तन के साथ बदलती रहती है। शासन प्रणाली में भी भिन्नता गहरी है—लोकतांत्रिक भारत और ब्राज़ील से लेकर निरंकुश चीन और रूस तक। अभी भी इस समूह का कोई साझा व्यापार समझौता नहीं है, न ही कोई एकजुट विदेश नीति या साझा करेंसी। और जिस रेटिंग एजेंसी (Rating Agency) की चर्चा पहले होती थी, वह अब गुम है। न्यू डेवलपमेंट बैंक (New Development Bank) भी अब वैश्विक महत्त्वाकांक्षाओं से ज़्यादा आंतरिक विरोधाभासों का प्रबंधन करने में व्यस्त है। ब्रिक्स (BRICS), जो कभी एक वैकल्पिक ध्रुव की कल्पना था, आज कई बार एक ऐसा व्हाट्सएप समूह (WhatsApp Group) दिखता है—जहाँ चर्चाएँ तो बहुत हैं, लेकिन तालमेल कम। ब्रिक्स प्लस (BRICS+) में देशों बढ़ी है लेकिन अस्थिरता भी है। मध्य पूर्व, अफ्रीका और दक्षिण-पूर्व एशिया के देशों के शामिल होने से इसकी प्रतिनिधिकता तो बढ़ी है, लेकिन इसके वैचारिक मतभेद भी गहरे हुए हैं। यदि एकमात्र कोई साझा धागा है तो वह पश्चिमी वर्चस्व के प्रति असंतोष, विशेषकर वैश्विक वित्त और प्रतिबंध नीतियों को लेकर। लेकिन असंतोष से परे, सवाल यह है—क्या कोई साझा दृष्टिकोण है? ब्रिक्स (BRICS) के भीतर वैचारिक विविधता विशाल है। रूस जीवाश्म ईंधनों से चिपका है, जबकि मंच पर हरित विकास की बातें होती हैं। यूएई (UAE) चीनी तकनीक में आगे बढ़ रहा है, वहीं सऊदी अरब ब्रिक्स (BRICS) को लेकर सकारात्मक संकेत देता है, लेकिन पर्दे के पीछे अब भी वॉशिंगटन से जुड़ा रहता है। और चीन—जो हमेशा से इस मंच का सबसे बड़ा, सबसे चुप्पा-शातिर खिलाड़ी रहा है—इस पर अपनी छाया बनाए रखता है। हाल में राष्ट्रपति शी जिनपिंग का सम्मेलन में न आना इस चिंता को और बढ़ा गया कि चीन अब इस मंच को किस नज़र से देखने लगा है? फिर भी, तमाम अंतर्विरोधों के बावजूद, ब्रिक्स (BRICS) अप्रासंगिक नहीं हुआ है। दुसरे विश्व युद्ध के बाद बने पश्चिम-प्रधान वैश्विक ढाँचे—अमेरिकी नेतृत्व, तेल-आधारित वैश्विक अर्थव्यवस्था, और मुक्त व्यापार व्यवस्था अब दरक रही हैं। इसी खलीपन में ब्रिक्स (BRICS) को अवसर दिखता है। यह मंच आज ग्लोबल साउथ (Global South) की सबसे प्रमुख आवाज़ बन चुका है। और अब चुपचाप एक रणनीतिक बदलाव भी हो रहा है—ब्रिक्स (BRICS) देश पश्चिम-नियंत्रित आर्थिक ढाँचों के समानांतर अपनी वैकल्पिक व्यवस्थाएं खड़ी कर रहे हैं। ये डॉलर का कोई तत्काल छोड़ने वाले नहीं नहीं है, बल्कि एक सोची-समझी वह पुनर्रचना है जो उन अनुभवों से उपजी, जहाँ इन देशों को क्रेडिट इनकार या प्रतिबंध झेलने पड़े। भारत और ईरान जैसे देश अब इस वित्तीय आत्मनिर्भरता को अस्तित्व की रक्षा मानते हैं। भारत के लिए यह संतुलन और भी बारीक व गंभीर है। वह एक ओर ब्रिक्स (BRICS) को ग्लोबल साउथ (Global South) का प्रवक्ता बनाना चाहता है, दूसरी ओर क्वाड (Quad) और आई2यू2 (I2U2) जैसे मंचों में अपनी पश्चिमी साझेदारी को भी बढ़ा रहा है। यह दोहरी रणनीति ब्रिक्स (BRICS) की अंदरूनी दुविधाओं, अंतर्विरोधी बनावट का ही सबूत है। ब्रिक्स प्लस (BRICS+) अब पहले से कहीं अधिक बड़ा, ज़्यादा सुर्खियां, और अधिक विविधतापूर्ण मंच है। लेकिन वह पहले से अधिक बिखरा, और शायद स्वयं को लेकर दुविधा में भी है। यह कभी पश्चिमी संस्थानों के विकल्प के रूप में देखा गया था, लेकिन अब वही असमानताएँ इसमें भी झलकने लगी हैं। चीन के दबदबे, उसकी छाया से कई तरह की समस्याएं हो गई है। यह कहना जल्दबाज़ी होगी कि ब्रिक्स (BRICS) असफल हो गया है। यह आज भी एक ऐसा मंच है जहाँ ग्लोबल साउथ (Global South) की आवाज़ बिना अनुवाद के सुनी जाती है। लेकिन यह कहना कि यह मंच एकीकृत भू-राजनीतिक शक्ति बन चुका है—शायद अभी केवल एक आकांक्षा है। ब्रिक्स (BRICS) अब केवल एक नाम नहीं है—यह अब एक परीक्षा हैः क्या महत्वाकांक्षा मतभेदों को पार कर सकती है? क्या देशों की भीड़ बढ़ने से एकता बनी रहेगी? कोई साझा मकसद बनेगा?

-श्रुति व्यास

जवान देश, बुज़ुर्ग सत्ताः सठियाई राजनीति!

पिछले साल जब अमेरिका में राष्ट्रपति चुनाव की सरगर्मी तेज़ थी, तो सबसे ज़्यादा चर्चा नीतियों की नहीं, उम्र की थी। जो बाइडन की याददाश्त को लेकर सवाल थे, तो डोनाल्ड ट्रंप के भौकाल पर भी। मुद्दा यह नहीं था कि कौन बेहतर नेता है, बल्कि यह कि किस उम्र तक का नेतृत्व स्वीकार्य है? आज वही असहजता भारत की राजनीति में भी हल्के सुरों में सुनाई दे रही है। बंद दरवाज़ों के पीछे और नपे-तुले शब्दों में यह सवाल आकार ले रहा है—क्या प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी को अब पद छोड़ देना चाहिए, उस 75 साल की अनौपचारिक सीमा का पालन करते हुए, जिसे कभी उन्होंने खुद स्वीकार किया था? बीते हफ्ते आरएसएस प्रमुख मोहन भागवत के इस बयान के बाद ये कानाफूसी तेज़ हुई है कि 75 वर्ष की उम्र के बाद नेताओं को स्वेच्छा से पीछे हट जाना चाहिए। यह सीधा इशारा नहीं था, लेकिन भारतीय राजनीति में इशारे, बयान से कहीं ज़्यादा गूंजते हैं। यह अंतर्विरोध केवल भारत तक सीमित नहीं है। अफ्रीकी देश कैमरून में 92 वर्षीय राष्ट्रपति पॉल बिया, जो 1980 के दशक से सत्ता में हैं, ने हाल ही में घोषणा की कि वे आठवीं बार चुनाव लड़ेंगे। बहुतों को उम्मीद थी कि वे अब पद छोड़ेंगे—चाहे थकावट के कारण या उम्र के सम्मान में। लेकिन उन्होंने ऐसा नहीं किया। इसके बजाय, उनके इस फैसले ने वहां की युवा आबादी और सत्ता के बीच की खाई को और चौड़ा कर दिया। एक ऐसे देश में, जहां 60 प्रतिशत आबादी 25 वर्ष से कम है और मतदाता का बड़ा हिस्सा 30 से नीचे, वहां बिया की भाषा और सोच अब युवा पीढ़ी के लिए अपरिचित और असंबंधित लगने लगी है। रिपोर्ट्स कहती हैं कि युवा मतदाता आगे मतदान से दूर रह सकते हैं—निराश, कटे हुए, और दोहराव से थके हुए। समय और नेतृत्व के बीच यह खिंचाव अब वैश्विक विमर्श में कई तरफ है। हम उस युग में रह रहे हैं, जहां दुनिया एआई क्रांति में है, सांस्कृतिक परिवर्तन बहुत तेज़ हैं, और जलवायु से लेकर रोज़गार तक के मुद्दों पर युवाओं की अगुवाई में आंदोलन चल रहे हैं। और फिर भी, दुनिया के ज़्यादातर राजनीतिक ताने-बाने, चेहरे बीसवीं सदी में ही जमे हुए हैं। भारत में यह विरोधाभास और गहरा है। भारत की 140 करोड लोगों की आबादी की औसत आयु 30 वर्ष से भी कम है, लेकिन नेतृत्व अब भी 70 पार के लोगों के हाथ में है। ऐसे में सवाल उठता है—क्या राजनीतिक कल्पना, भविष्य की दृष्टि पिछली सदी के फ्रेम, जुमलों, भाषणों में ही फंसी रहेगी? प्राचीन यूनानी इतिहासकार प्लूटार्क ने कभी कहा था कि उम्र अनुभव और गहराई देती है, लेकिन इसके साथ बदलाव से जड़ता भी आती है। सत्ता, उन्होंने चेताया था, इंसान के चरित्र की अच्छाई और बुराई दोनों को बढ़ा देती है। आज अगर दुनिया पर नज़र डालें—बेंजामिन नेतन्याहू 74 के हैं, पुतिन और शी जिनपिंग दोनों 71, ईरान के अयातुल्ला खामेनेई 85, और पाकिस्तान के शहबाज़ शरीफ 73 साल के। क्या उम्र ने इन्हें अधिक शांतिपूर्ण और विवेकपूर्ण, समझदार नेता बनाया है, या केवल सत्ता से चिपके रहने की ज़िद बनवाई है? प्लूटार्क ने यह भी कहा था कि किसी समाज को अपने बुज़ुर्गों को पूरी तरह छोड़ नहीं देना चाहिए—क्योंकि महत्वाकांक्षा जब विवेक से अलग हो जाए, तो वह खतरनाक हो जाती है। लेकिन आज का समय ऐसे उदाहरणों से भी भरा है जहाँ युवाओं ने नेतृत्व संभाला—आयरलैंड के लियो वराडकर 38 की उम्र में प्रधानमंत्री बने; न्यूजीलैंड की जैसिंडा आर्डर्न 37 की उम्र में; फ्रांस के इमैनुएल मैक्रों 39 की उम्र में राष्ट्रपति बने। और सबसे महत्वपूर्ण यह कि वराडकर और आर्डर्न ने खुद सत्ता से संन्यास लिया—बिना हार, बिना दबाव, केवल इसलिए कि वे अब भीतर से तैयार नहीं थे। जैसिंडा ने प्रधानमंत्री पद छोड़ते हुए कहा था, "अब मेरे पास उतनी ऊर्जा नहीं बची कि इस पद का पूरा न्याय कर सकूं।" सोचे, आज की सत्ता-लोलुप राजनीति में एक नेता की ऐसी स्वीकारोक्ति और उस आधार पर रिटायर होना कितना दुर्लभ है। बावजूद इसके राजनीति लगातार "बुज़ुर्गतंत्र" से संचालित हो रही है। भारत जैसे देश में, जहां युवा हर क्षेत्र में आगे हैं, वहीं नेतृत्व दो या तीन पीढ़ी पुराने नेताओं के हाथ में है। अमेरिका में, उम्र को लेकर चिंता के बावजूद, करोड़ों लोग अब भी बाइडन और ट्रंप जैसे 70–80 पार नेताओं को चुनने को तैयार हैं। कैमरून में 92 वर्षीय नेता आठवीं बार मैदान में उतर रहे हैं। तो सवाल है—दुनिया की सबसे युवा जनता बार-बार सबसे बुढे नेताओं को क्यों चुन रही है? इसका एक उत्तर कल्पनाशीलता के संकट में छिपा है। लोग विकल्प की कल्पना करने, साहस से कतराते हैं। चारों ओर जो निराशा और व्यवस्था पर विश्वास की कमी है, उसने सोच को कुंद कर दिया है। यह ऐसा है जैसे धुंध ने आकाश ढक दिया हो—और अब उस पार देखना, अंधेरे की खाई में झांकने जैसा लगता है। सोशल मीडिया ने इसे और गहरा किया है। भारत में देखिए—व्हाट्सएप पर मोदी को दैविक नेता की तरह दिखाया जाता है। X (ट्विटर) पर स्थिरता के आंकड़ों की बाढ़ है। इंस्टाग्राम पर 'मोदी है तो मुमकिन है', और राहुल गांधी अब भी 'पप्पू' के फ्रेम से बाहर नहीं आ पाए। तभी जो राजनीतिक संस्थाएं बदलाव के लिए बनी थीं, वे अब इस तरह ढल चुकी हैं कि स्थायित्व को प्राथमिकता दी जाती है। बुढ़े नेताओं के पास पहचान है, नेटवर्क है, और "परीक्षित" होने की छवि है—भले ही थक चुके हों। वहीं दूसरी ओर, राजनीतिक दल भी युवाओं के लिए सशक्त विकल्प प्रस्तुत नहीं कर पा रहे। और जिन समाजों में उम्र को अब भी अनुभव और अधिकार का पर्याय माना जाता है, वहां यह चक्र चलता रहता है। Gen Z भले ही डिजिटल प्लेटफॉर्म्स पर बदलाव की आवाज़ बुलंद कर रहा हो, लेकिन चुनावों में अक्सर 'परिचित' और 'स्थिर' विकल्प को ही वोट देता हैं। आज डर यह नहीं है कि युवा तेज़ी से आगे आ जाएंगे—डर यह है कि सत्ता में जमे बुज़ुर्ग, 'स्थिरता' के नाम पर, संस्थाओं को भीतर से खोखला कर रहे हैं। तो समस्या केवल बुज़ुर्गतंत्र नहीं है। समस्या उन विचारों की है जो इसे टिकाए रखते हैं—यह धारणा कि केवल बुज़ुर्ग ही ज़िम्मेदार शासन दे सकते हैं; कि बदलाव खतरनाक है; विकल्प नहीं है, कि व्यवस्थाएं धीरे चलनी चाहिए जबकि दुनिया चारों ओर तेज़ी से बदल रही हो और आवश्यकता भविष्य के तकाजे में नए खून की है। जब तक ऐसा नेतृत्व सामने नहीं आता, जो केवल युवा दिखता ही नहीं बल्कि युवा सोचता भी हो—जो समावेशन, कल्पना और तात्कालिकता की भाषा बोले—तब तक भविष्य केवल दरवाज़ा खटखटाता रहेगा उन दरवाज़ों पर, जो एक दिन इतने बूढ़े हो जाएंगे कि उस दस्तक को सुन ही नहीं पाएंगे।

-श्रुति व्यास

आधार का अब क्या होगा!

देश के 99.9 फीसदी लोगों को मिले यूनिक आइडेंटिफिकेशन नंबर और आधार कार्ड का अब क्या होगा? यह लाख टके का सवाल है, जिसका जवाब किसी के पास नहीं है। वैसे तो यह सवाल बिहार में मतदाता सूची का विशेष गहन पुनरीक्षण होने के बाद से ही पूछा जा रहा है लेकिन अब ज्यादा प्रासंगिक हो गया है क्योंकि चुनाव आयोग ने सुप्रीम कोर्ट में हलफनामा देकर इसकी उपयोगिता को शून्य कर दिया है। बिहार में मतदाता सूची के पुनरीक्षण के मसले पर 28 जुलाई को सुप्रीम कोर्ट में सुनवाई होने वाली है। उससे पहले पिछली सुनवाई में सुप्रीम कोर्ट ने चुनाव आयोग को 21 जुलाई तक हलफनामा देने को कहा था। साथ ही सुप्रीम कोर्ट ने यह सलाह दी थी कि आयोग को मतदाता सूची के सत्यापन में आधार, मनरेगा कार्ड और राशन कार्ड को स्वीकार करने पर विचार करना चाहिए। चुनाव आयोग ने 21 जुलाई को हलफनामा दायर किया, जिसमें कहा कि किसी को भी मतदाता बनाने के लिए जरूरी है कि चुनाव आयोग उसकी नागरिकता का सत्यापन करे, जो आधार के जरिए नहीं हो सकता है। चुनाव आयोग ने लिख करके बता दिया कि आधार की कोई उपयोगिता नहीं है। ध्यान रहे केंद्र सरकार ने आधार कार्ड बनवाने के लिए राज्य की सारी ताकत लगाई थी। सरकार ने इतना दबाव बनाया था कि नागरिक समूहों को राहत के लिए सुप्रीम कोर्ट जाना पड़ा। सुप्रीम कोर्ट के पांच जजों की संविधान पीठ ने सितंबर 2018 में आम लोगों को राहत देते हुए कहा कि सरकार किसी भी सेवा के लिए आधार अनिवार्य नहीं कर सकती है। इसके बावजूद सरकार नहीं मानी और उसने नागरिकों पर दबाव बनाए रखा। सर्वोच्च अदालत के फैसले के बाद भी नागरिकों को कई किस्म की सेवाओं के लिए

आधार की अनिवार्यता बनी रही। भले सेवाएं रोकी नहीं गईं, लेकिन यह दबाव बनाए रखा गया कि नागरिक आधार बनवाएं और उसे अपने बैंक खातों से जुड़वाएं, आईटी रिटर्न के अपने खाते से जुड़वाएं, गाड़ियों के रजिस्ट्रेशन और जमीन खरीद के दस्तावेजों में आधार नंबर लिखवाएं, कर्मचारी प्रॉविडेंट फंड के साथ जुड़वाएं और यहां तक कि वोटर आईडी के साथ भी आधार जुड़वाने का दबाव बनाए रखा गया। सुप्रीम कोर्ट के आदेश के बावजूद चुनाव आयोग ने करीब 66 करोड़ मतदाताओं का आधार हासिल कर लिया। सोचें, चुनाव आयोग ने देश के मतदाताओं की गर्दन पर तलवार रख दी कि उन्हें हर हाल में अपने यूनिक आइडेंटिफिकेशन नंबर को अपने इपिक नंबर के साथ यानी आधार को वोटर आईडी के साथ लिंक करना है। आयोग के निर्देश में बहुत साफ कहा गया है कि अगर कोई व्यक्ति आधार को वोटर आईडी के साथ लिंक नहीं करता है तो उसे इसका वाजिब कारण बताना होगा और चुनाव आयोग को संतुष्ट करना होगा। जाहिर चुनाव आयोग किसी भी कारण से संतुष्ट नहीं हो सकता था। जिस चुनाव आयोग ने सारी आपत्तियों को खारिज करके आधार को वोटर आईडी से लिंक कराने का अभियान चलाया वह अब कह रहा है कि आधार किसी काम नहीं है! आधार को वोटर आई कार्ड से जोड़ने का विरोध करने वाले लोग सबसे बड़ा कारण बता रहे थे कि उनकी निजता का हनन होगा क्योंकि आधार के साथ बायोमीट्रिक डिटेल्स यानी नागरिकों की उंगलियों के निशाना और आंखों की रेटिना का स्कैन होता है। लेकिन चुनाव आयोग का कहना था कि उसके पास डेटा प्रोटेक्शन का बेहतरीन सिस्टम है और किसी का डेटा लीक नहीं होगा। कुछ समय पहले तक चुनाव आयोग हर हाल में आधार और मतदाता सूची को लिंक कराने का अभियान चला रहा था उसने अब कह दिया है कि आधार से मतदाता सूची नहीं बनाई जाएगी। य़ानी अगर किसी के पास पहचान के लिए एकमात्र दस्तावेज आधार है वह मतदाता नहीं बन पाएगा। चुनाव आयोग ने इसका कारण बताते हुए कहा कि आधार से न तो आवास का पता प्रमाणित होता है, न जन्म की तारीख प्रमाणित होती है और न उससे नागरिकता प्रमाणित होती है। इसका मतलब है कि आधार से सिर्फ यह प्रमाणित होता है कि आप इंसान हैं, एलियन या पशु नहीं हैं। वैसे भी आधार बनाने की प्रक्रिया बहुत ढीली ढाली थी। विधायकों और पार्षदों के लिख कर दे देने से आधार बन जाता था। बिहार के कई जिलों में आबादी से ज्यादा आधार बना हुआ है। ऐसा नहीं है कि सरकार और चुनाव आयोग को यह पता नहीं है। फिर भी कुछ दिन पहले तक आधार को हर पहचान और हर सेवा के लिए जरूरी बताया जा रहा था और अब उसकी उपयोगिता शून्य कर दी गई है। सभी नागरिकों के बैंक खातों को आधार से लिंक किया गया है और सरकार की ओर से डायरेक्ट बैंक ट्रांसफर यानी डीबीटी के जरिए नागरिकों को मिलने वाली हर योजना का पैसा आधार से लिंक्ड खातों में ट्रांसफर होता है। एक अनुमान के मुताबिक केंद्र और राज्यों का मिला कर कुल 44 लाख करोड़ रुपए की राशि या सेवा देश के नागरिकों को आधार से जुड़े खातों के जरिए दी जाती है। प्रधानमंत्री सौ बार दावा कर चुके हैं कि जनधन खाता, आधार और मोबाइल यानी जैम के जरिए लाखों करोड़ रुपए की बचत की गई है। ये सारे दावे आधार का महत्व बताने के लिए किए गए। आधार को जीवन का आधार बना दिया गया। हजारों करोड़ रुपए इसके ऊपर खर्च किए गए। देश के नागरिकों को करोड़ों घंटे इसे बनवाने में लगे। और अब स्थिति यह है कि इससे न तो किसी नागरिक का पता प्रमाणित होगा, न जन्मतिथि प्रमाणित होगी और न उसकी नागरिकता प्रमाणित होगी। क्या यह पूरी तरह से बेकार दस्तावेज हो गया? क्या अब पासपोर्ट बनवाने के लिए आधार नहीं मान्य होगा? बैंक खाते खुलवाने या फोन का कनेक्शन लेने के लिए इसे नहीं स्वीकार किया जाएगा? बैंक खातों या आईटी रिटर्न के साथ आधार को लिंक करना अब जरूरी नहीं रह जाएगा? आयुष्मान भारत से लेकर किसान सम्मान निधि तक क्या जितनी योजनाओं का लाभ लोग ले रहे हैं उनके लिए आधार की बजाय किसी दूसरे दस्तावेज की जरुरत होगी और उसके लिए क्या लोगों को नए सिरे से अपने खातों की केवाईसी दूसरे दस्तावेजों के जरिए करानी होगी? अगर ऐसा होता है तो यह आम लोगों के लिए एक बड़ी मुश्किल वाली बात होगी क्योंकि देश के ज्यादातर लोगों के पास आधार के जरिए बने दस्तावेजों के अलावा दूसरे दस्तावेज नहीं हैं। मैट्रिक पास होने का प्रमाणपत्र या जन्म का और आवास का प्रमाणपत्र या सरकारी नौकरी का प्रमाणपत्र कितने लोग दे पाएंगे?

धर्म, संस्कृति, परंपरा व सामाजिक समरसता का अद्भुत संगम!

पवित्र श्रावण मास चल रहा है, इस मास में देश के विभिन्न हिस्सों में शिवभक्त देवाधिदेव भगवान महादेव के ऊपर पवित्र नदियों का जल चढ़ाने के लिए सदियों से कांवड़ लेकर आते हैं। हालांकि कुछ लोगों के मन में यह प्रश्न उठता रहता है कि आखिर यह कांवड़ यात्रा क्या है, उन्होंने बेहद सरल शब्दों में यह समझना चाहिए कि कांवड़ यात्रा सनातन धर्मियों की केवल आस्था का ही नहीं बल्कि हमारे प्यारे देश भारत की समृद्धशाली धर्म-सांस्कृतिक, प्राचीन परंपरा और विरासत का एक अद्भुत प्रतीक है। वैसे भी सनातन धर्म-संस्कृति में पवित्र श्रावण मास की शिवरात्रि को देवाधिदेव भगवान महादेव की आराधना के लिए सबसे श्रेष्ठ दिन माना जाता है। इसलिए शिव भक्तों के द्वारा श्रावण मास की शिवरात्रि को भगवान शिव की पूजा-अर्चना करके कांवड़ से लाये पवित्र जल के माध्यम से जलाभिषेक करके इसको एक भव्य महापर्व के रूप में मनाया जाता है। हालांकि पूरे श्रावण मास में ही भगवान शिव का जलाभिषेक करने के लिए शिव भक्त दूर-दूर से पवित्र नदियों खासतौर पर गंगा के जल को सनातन धर्म की बेहद प्राचीन धर्म-संस्कृति व परंपराओं के अनुसार लाकर भगवान शिव के शिवलिंग का जलाभिषेक करते हैं। देश-दुनिया में पवित्र नदियों के जल को शिव भक्तों के कंधे पर बांस की बनी कांवड़ के दोनों सिरों पर लटके हुए कलश में लेकर के आने की इस अद्भुत यात्रा को ही कांवड़ यात्रा कहते हैं। सदियों के बाद आज के दौर में शिव भक्त हर वर्ष तरह-तरह की कांवड़ लेकर आते हैं, जो लोगों को आकर्षित करने का कार्य करती हैं। कांवड़ यात्रा भगवान भोलेनाथ की पूजा अर्चना का एक धार्मिक अनुष्ठान मात्र ही नहीं है, बल्कि यह यात्रा प्राचीन धर्म-संस्कृति, परंपराओं व सामाजिक समरसता का एक विशाल अद्भुत संगम है। भगवान शिव के आशिर्वाद से हर वर्ष ही कांवड़ यात्रा से जहां एक तरफ तो लाखों लोगों को रोजगार मिलने से उनका परिवार पलता है, वहीं दूसरी तरफ यह भगवान शिव की पूजा-अर्चना करके उन्हें खुश करने का एक बड़ा अवसर भक्तों को मिलता है। कांवड़ यात्रा लोगों को एक जुट रहकर के जल की एक-एक बूंद की अहमियत को बताते हुए प्रकृति की पूजा के बारे में बताती है, वहीं सनातन धर्मियों को बड़े पैमाने पर इकट्ठा करके जातियों के जहरीले बंधनों को तोड़कर

के सनातनियों को एक सूत्र में पिरोने का एक बहुत बड़ा संदेश भी देती है। कांवड़ यात्रा एक कठिन तपस्या भी है, जिसमें भक्त पवित्र नदियों से जल लेकर के भगवान शिव को चढ़ाते हैं। पवित्र नदियों का जल लेकर के भगवान शिव पर जल चढ़ाने की प्रथा सदियों से चली आ रही है। यहां तक की हमारे पुराणों और ग्रंथों में भी कांवड़ यात्रा से संबंधित तथ्य मिलते हैं। शिव भक्त कांवड़िए कांवड़ अलग-अलग तरह की कांवड़ लेकर आते हैं। बहुत सारे भक्त सामान्य कांवड़ लेकर पैदल चलते हैं जिसमें आवश्यकताओं अनुसार भक्त विश्राम करते हुए भगवान शिव का जलाभिषेक करने के लिए गंगा जल लाते हैं। वहीं डाक कांवड़ में शिवभक्त गंगा जल लेकर लगातार दौड़ लगाने की कठिन तपस्या करते हुए, शिव-शंभु का जलाभिषेक करते हैं, यह कांवड़ आजकल बहुत ज्यादा प्रचलन में है। वहीं खड़ी कांवड़ में कांवड़ को जमीन पर नहीं रखा जाता है, विश्राम करते समय भी दूसरा साथी कांवड़ कंधों पर रखता है। वहीं कुछ शिव भक्त बैठी कांवड़ लेकर आते जिसमें वह कांवड़ पास रखकर के बैठकर आराम कर सकते हैं। वहीं कुछ भक्त दंडी कांवड़ लेकर आते हैं जो सबसे कठिन होती है, इसमें कांवड़िया दंडवत प्रणाम करते हुए निशान लगाते हुए धीरे-धीरे आगे बढ़ते हैं, यह सबसे कठिन प्रकार की कांवड़ यात्रा होती है। सदियों पहले कांवड़ यात्रा की शुरुआत कैसे हुई, इसके संदर्भ में कई पौराणिक मान्यताएं हैं, माना जाता है कि समुद्र मंथन में निकले हलाहल विष को भगवान शिव ने जब पीकर अपने कंठ में इकट्ठा कर लिया था, तो देवताओं ने भगवान शिव का जलाभिषेक करना शुरू कर दिया था। वहीं कुछ पौराणिक कथाओं के मतानुसार रावण को ही पहला कांवड़िया माना जाता है। कहा जाता है कि भगवान शिव समुद्र मंथन से निकले हलाहल विष को पीकर जब ताप से बेहद व्याकुल हो गए थे, तब उन्होंने अपने अनन्य भक्त लंका नरेश रावण को पुकारा था, शिव भक्त रावण ने तत्काल उपस्थित होकर भगवान शिव के हालात देखकर के उनका जलाभिषेक करना शुरू कर दिया था। जिससे भगवान शिव को शांति मिली थी। यह भी कहा जाता है कि भगवान परशुराम ने गढ़मुक्तेश्वर से गंगा से जल लाकर के जब पुरा महादेव मंदिर बागपत में भगवान शिव का जलाभिषेक किया था, तब से ही कांवड़ यात्रा की शुरूआत हुई है। वहीं रामायण में उल्लेख मिलता है कि त्रेतायुग में श्रवण कुमार ने अपने नेत्रहीन माता-पिता को बांस की डंडे के दोनों ओर बंधी टोकरियों में बैठाकर गंगा स्नान व तीर्थाटन करवाने की यात्रा शुरू की थी, तब से ही कांवड़ यात्रा की शुरूआत हुई। हांलांकि आज भी कांवड़ यात्रा में चंद विधर्मी हुड़दंगियों को छोड़ दिया जाए तो यह एक बहुत ही कठिन जप-तप वाली तपस्या है, जोकि शिव भक्त कांवड़ियों के अपने आराध्य भगवान शिव पर अटूट विश्वास के दम पर ही पूर्ण होती है। शिव भक्तों की कांवड़ भगवान शिव के प्रति आस्था अटूट समर्पण और भक्ति का प्रतीक है। कांवड़ यात्रा के दौरान कांवड़ को कंधे पर रखकर के पैदल चलते हुए शिव भक्त तरह-तरह के शारीरिक कष्ट सहते हैं, फिर भी शिव भक्तों की भगवान शिव के प्रति आस्था जरा सी भी कम नहीं होती है।

- दीपक कुमार त्यागी

21 साल पहले मॉरीशस से भारत कैसे लौटा मिराज 2000...ब्रिटिश एफ-35बी ने याद करा दी इंडियन एयर फोर्स की दिलेरी

एजेंसी नई दिल्ली

ब्रिटिश रॉयल नेवी का स्टील्थ फाइटर जेट F-35B तकनीकी खराबी की वजह से 37 दिनों तक केरल के तिरुवनंतपुरम इंटरनेशनल एयर पोर्ट पर फंसा रहा। इतने दिनों में कई अमेरिकी और ब्रिटिश इंजीनियरों की टीमें आईं और पांचवीं पीढ़ी के इस अत्याधुनिक लड़ाकू विमान के हाइड्रोलिक सिस्टम को ठीक करने में नाकाम होती चली गईं। आखिरकार 24 सदस्यीय एक ब्रिटिश इंजीनियरिंग टीम को सफलता मिली और मंगलवार (22 जुलाई,2025) को यह विदेशी फाइटर जेट भारत से निकल पाया। यह 14 जून से यहां फंसा हुआ था। लेकिन, 21 साल पहले भारतीय वायु सेना ने मॉरीशस में फंसे अपने एक फाइटर जेट मिराज-2000 को जिस तरह से वहां से निकालकर भारत लाने में कामयाबी पाई थी, वह हमेशा के लिए इसकी दिलेरी की एक कहानी बन गई है। यहां हम भारतीय वायु सेना के जिस मिशन की बात करने जा रहे हैं, उसे न्यूज एजेंसी पीटीआई ने विमानन इतिहास में साहस, कौशल और तकनीकी प्रतिभा के सबसे शानदार प्रदर्शनों में से एक बताया है। बात अक्टूबर 2004 की है, जब इंडियन एयर फोर्स (IAF) ने एक बहुत ही जोखिम भरे मिशन को पूरा कर दिखाया था। इस मिशन का मकसद, एक बुरी तरह से क्षतिग्रस्त मिराज-2000 फाइटर जेट को वापस स्वदेश लाना। यह लड़ाकू विमान 22 दिनों से मॉरीशस में फंसा हुआ था। फ्रांस में बना इंडियन एयर फोर्स का यह विमान मिराज-2000 एक एयर शो में हिस्सा लेने के लिए मॉरीशस गया हुआ था। वहां, 4 अक्तूबर, 2004 को पोर्ट लुइस के सर सीवूसागर रामगुलाम इंटरनेशनल एयर पोर्ट पर इसकी बेली लैंडिंग हुई। मतलब, विमान को बिना लैंडिंग गियर के ही उतरना पड़ा, जिससे इसे काफी नुकसान हुआ। बेली लैंडिंग की वजह से इस फाइटर जेट का ऑक्जिलरी फ्यूल टैंक, एयरफ्रेम, एवियोनिक्स, कॉकपिट इंस्ट्रूमेंट बुरी तरह टूट-फूट गए। वहां इसकी मरम्मत तब असंभव थी। भारतीय वायु सेना करोड़ों डॉलर के फाइटर जेट को विदेशी धरती पर छोड़ भी नहीं सकती थी। भारतीय वायु सेना ने ठान लिया कि क्षतिग्रस्त फाइटर जेट को वापस भारत लाना है। मिशन चुनौतीपूर्ण था, लेकिन साहसिक भी। मॉरीशस के लिए इंजीनियरों, पायलटों और दो परिवहन विमानों को रवाना किया गया। एक आईएल-76 विमान में स्पेयर पार्ट्स डालकर भेजा गया और दूसरे आईएल-78 में हवा में रिफ्यूलिंग करने वाला टैंकर लादा गया। टीम ने दो हफ्ते तक लगातार मेहनत की और मिराज को किसी तरह से उड़ने लायक बना दिया। इस मनोबल के दम पर विमान 13 अक्तूबर को ही ग्राउंड रन के लिए तैयार था और 14 को इसने पहली परीक्षण उड़ान भी भर ली। इस मिशन को अंजाम तक पहुंचाने के लिए पायलट के तौर पर स्क्वाड्रन लीडर जसप्रीत सिंह को चुना गया। क्योंकि, इंडियन एयर फोर्स को एक ऐसे कुशल पायलट की जरूरत थी, जो हिंद महासागर के सबसे खाली इलाके में इतने खतरनाक उड़ान को अंजाम देने के लिए तैयार हो। स्क्वाड्रन लीडर जसप्रीत सिंह ने बताया, 'यह समुद्र के ऊपर एक जोखिम भरी उड़ान थी,हालांकि मुझे अपनी असाधारण तकनीकी टीम पर पूरा यकीन था।' 26 अक्टूबर, 2004 को यानी 22 दिन बाद मौसम थोड़ा ठीक था। जसप्रीत सुबह 7.55 बजे मॉरीशस से मिराज-2000 लेकर भारत के लिए रवाना हुए। उन्हें पोर्ट लुइस से तिरुवनंतपुम के लिए उड़ान भरना था, जो करीब 2,126 समुद्री मील यानी लगभग 4,000 किलोमीटर दूर था। चुनौती ये थी कि इतनी लंबी यात्रा के लिए उन्हें हवा में तीन बार विमान में ईंधन भरना था। लेकिन, यह अभियान इतना आसान नहीं था और हर कदम पर जोखिम ही जोखिम था। मसलन- यदि कुछ दिक्कत आती तो उतरने के लिए कोई वैकल्पिक हवाई क्षेत्र उपलब्ध नहीं था।

हवाई क्षेत्र रडार-विहीन था और सीधा रेडियो संपर्क भी नहीं था। उड़ान भरने के मात्र 11 मिनट बाद ही हवा में पहली बार ईंधन भरना था। उड़ान के अंतिम चरण में, ईंधन बचाने के लिए मिराज को 40,000 फीट से ऊपर मैच (ध्वनि की गति) 0.92 की गति से उड़ना था। इस गति के लिए विमान को टेस्ट भी नहीं किया गया था। फिर भी स्क्वाड्रन लीडर जसप्रीत ने मिशन को संभव कर दिखाया। दोपहर 2.50 बजे, 5 घंटे और 10 मिनट की उड़ान के बाद मिराज-2000 तिरुवनंतपुरम हवाई अड्डे पर सुरक्षित लैंड कर गया। अगले दिन इस जेट को बेंगलुरु स्थित हिंदुस्तान एयरोनॉटिक्स लिमिटेड (HAL) ले जाया गया, जहां इसकी पूरी मरम्मत हुई और चार महीने के अंदर यह वापस इंडियन एयर फोर्स की सेवा में उतर आया।

चीन ने तोड़ डाला अमेरिकी नौसेना का वर्चस्व, एयरक्राफ्ट कैरियर पर तैनात किया J-35 पांचवीं पीढ़ी का लड़ाकू विमान, F-35 से सीधा मुकाबला

एजेंसी बीजिंग

चीन ने अमेरिकन नेवी के वर्चस्व को तोड़ दिया है। सालों से अमेरिका दुनिया का इकलौता देश था, जिसके पास पांचवीं पीढ़ी का लड़ाकू विमान F-35 मौजूद था। लेकिन अब चीन दुनिया की दूसरी ऐसी शक्ति बन गया है, जिसके एयरक्राफ्ट कैरियर पांचवीं पीढ़ी के लड़ाकू विमानों से लैस होंगे। चीन ने अब अपनी पहली नेवल स्टील्थ फाइटर J-35 की तैनाती के साथ अमेरिका के F-35 को सीधी चुनौती दे दी है। चीन का ये कदम चीन की नौसेना की विशालकाय ताकत और मार करने की क्षमता का प्रदर्शन है। रिपोर्ट के मुताबिक चीन की पीपुल्स लिबरेशन आर्मी नेवी (PLAN) को दो J-35 स्टील्थ फाइटर सौंप दिए गये हैं। इन दोनों लड़ाकू विमानों को खास तौर पर एयरक्राफ्ट कैरियर पर ही तैनाती के लिए डिजाइन किया गया है। चीन के एक्सपर्ट्स दावा करते हैं कि जे-35, अमेरिका के फिफ्थ जेनरेशन फाइटर जेट F-35C लाइटनिंग II के समान ही क्षमताओं से लैस है। हालांकि चीनी एक्सपर्ट्स के दावे पूरी तरह से सही नहीं है। आपको बता दें कि J-35 स्टील्थ फाइटर जेट के दो वैरिएंट हैं। Tail Numbers 0011 और 0012। इन दोनों की तस्वीरें चीनी सोशल मीडिया Weibo पर काफी वायरल हो रही हैं। तस्वीरों में ये लड़ाकू विमान उड़ान भरते और J-15B जैसे मौजूदा चीनी फाइटर जेट के साथ दिखाई दे रहे हैं। उनकी पूंछ पर 'शार्क माउथ' जैसी पेंटिंग है, जो दर्शाता है कि ये चीन की नौसेना के सक्रिय बेड़े में इन्हें शामिल किया जा चुका है। अमेरिकी नौसेना के पास फिलहाल दुनिया में सबसे ज्यादा 11 परमाणु ऊर्जा से चलने वाले एयरक्राफ्ट कैरियर हैं। जबकि चीन के पास फिलहाल दो एयरक्राफ्ट कैरियर लियाओनिंग और शांदोंग ही एक्टिव सर्विस में शामिल हैं। इसके अलावा चीन का तीसरा एयरक्राफ्ट कैरियर फुजियान फिलहाल समुद्री परीक्षणों से गुजर रहा है। उसके अलावा चीन कम से कम 3 एयरक्राफ्ट कैरियर और बना रहा है। चीन के चौथे एयरक्राफ्ट कैरियर का कोडनेम "टाइप 004" है। चीन के पास फिलहाल मौजूद तीनों एयरक्राफ्ट कैरियर पारंपरिक हैं, लेकिन टाइप 004 परमाणु ऊर्जा से चलने वाला एयरक्राफ्ट कैरियर होगा। चीन ने शेनबेई न्यू डिस्ट्रिक्ट में 270,000 वर्ग मीटर का एक विशाल संयंत्र बनाया है। जहां शेनयांग एयरक्राफ्ट कॉर्पोरेशन J-35 स्टील्थ लड़ाकू विमानों का उत्पादन करेगा। पश्चिमी विश्लेषकों का कहना है कि यहां पर हर साल करीब 100 विमान तैयार करने की चीन की योजना है। चीन अब अमेरिकी नौसेना के लिए कड़ी चुनौती पेश कर रहा है। पश्चिमी देशों के एक्सपर्ट्स का कहना है कि हालांकि अमेरिका के पास अभी भी संख्या और टेक्नोलॉजी को लेकर काफी ज्यादा बढ़त हासिल है, लेकिन जिस रफ्तार से चीन अपनी नौसेना और एयरक्राफ्ट कैरियर का बेड़ा तैयार कर रहा है, वो अगले 5 से 10 वर्षों में ये अंतर तेजी से कम हो सकता है। अमेरिकी एयरक्राफ्ट कैरियर पर F-35 स्टील्थ जेट दूसरी तरफ अमेरिका के पास अभी भी 11 परमाणु ऊर्जा से चलने वाले एयरक्राफ्ट कैरियर हैं, जिन पर F-35C की 110 से ज्यादा लड़ाकू विमानों की यूनिट्स तैनात हैं। F-35C की लंबी रेंज, फोल्डेबल विंग्स और घातक हथियार सिस्टम इसे एक महान ताकत बनाती है। लेकिन पहली बार अमेरिका को नेवल स्टील्थ टेक्नोलॉजी में एक गंभीर प्रतियोगी मिला है। F-35C ने हाल ही में नवंबर 2024 में यमन में हूती विद्रोहियों के खिलाफ ऑपरेशन में लड़ाकू डेब्यू किया था। लेकिन J-35 को अभी अपनी लड़ाई करने की क्षमता का प्रदर्शन करना बाकी है। लेकिन J-35 लड़ाकू विमानों की तैनाती के साथ चीन ने अमेरिका को एक सीधा संकेत दे दिया है कि नौसैनिक वर्चस्व अब एकतरफा नहीं रहने वाला।

सुरक्षा परिषद की बैठक में भारत-पाकिस्तान में भिड़ंत, जिन्ना के देश ने संयुक्त राष्ट्र के मंच से जमकर उगला जहर

एजेंसी इस्लामाबाद

पाकिस्तान को संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद की अध्यक्षता का बेजा फायदा उठा रहा है। भारत के बयानों से बिफरे पाकिस्तान ने सुरक्षा परिषद में आतंकवाद को लेकर जमकर झूठे आरोप लगाए हैं। पाकिस्तानी राजदूत उस्मान जादून ने परिषद की बैठक के दौरान बिना सबूत दिए भारत पर आतंकवाद फैलाने, उसकी सहायता करने और बढ़ावा देने का आरोप लगाया। इतना ही नहीं, उसने सीमा पार आतंकवाद में अपनी भूमिका का भी खंडन किया, जबकि पूरी दुनिया जानती है कि पाकिस्तान आतंकवाद का सबसे बड़ा स्पॉन्सर देश है। दुनिया में होने वाली अधिकतर आतंकवादी घटनाओं के तार पाकिस्तान से ही जुड़े होते हैं। "बहुपक्षवाद और विवादों के शांतिपूर्ण समाधान के माध्यम से अंतर्राष्ट्रीय शांति और सुरक्षा को बढ़ावा देना" विषय पर संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद में आयोजित एक बहस के दौरान बोलते हुए, संयुक्त राष्ट्र में पाकिस्तान के उप-स्थायी प्रतिनिधि राजदूत उस्मान जादून ने आतंकवाद में पाकिस्तान की भूमिका पर जमकर सफाई दी। उन्होंने दावा किया कि पाकिस्तान आतंकवाद का समर्थक नहीं, बल्कि पीड़ित देश है। उन्होंने भारत से पाकिस्तान पर आतंकवाद का आरोप लगाने से बचने का भी आग्रह किया। दरअसल, पाकिस्तान संयुक्त राष्ट्र में भारत के राजदूत पर्वतनेनी हरीश द्वारा लगाए गए आरोपों पर भड़का हुआ है। भारत के आरोपों का जवाब देते हुए, राजदूत उस्मान जादून ने मंगलवार शाम 15 सदस्यीय निकाय के सामने जमकर जहर उगला। उन्होंने भारत पर पाकिस्तान में आतंकवाद को सक्रिय रूप से प्रायोजित करने, सहायता देने और बढ़ावा देने का आरोप लगाया। राजदूत जादून ने कहा कि यह विशेष रूप से खेदजनक है कि भारतीय राजदूत ने मंगलवार को पाकिस्तान पर निशाना साधा, जबकि इससे पहले सुरक्षा परिषद ने सर्वसम्मति से संयुक्त राष्ट्र चार्टर के उद्देश्यों और सिद्धांतों तथा विवादों के शांतिपूर्ण समाधान, अंतर्राष्ट्रीय कानून के सम्मान और सुरक्षा परिषद के प्रस्ताव के प्रभावी कार्यान्वयन की अनिवार्यता की पुष्टि की थी। पाकिस्तानी राजदूत ने भारत पर कश्मीर पर अवैध कब्जा करने का भी आरोप लगाया, जबकि वह यह भूल गया कि कश्मीर भारत का अभिन्न अंग है और उनके देश ने पाकिस्तान अधिकृत कश्मीर पर अवैध कब्जा किया हुआ है। यह कब्जा इसलिए भी अवैध है, क्योंकि पाकिस्तान ने आजादी के तुरंत बाद कबायलियों के भेष में अपने सैनिकों को भेजकर कश्मीर पर कब्जा करने का दुस्साहस किया था। पाकिस्तानी राजदूत ने कश्मीर पर सुरक्षा परिषद के प्रस्तावों का भी हवाला दिया औऱ कश्मीरी लोगों के आत्मनिर्णय के अधिकारों का भी राग अलापा।

तुर्की ने लॉन्च की पहली हाइपरसोनिक मिसाइल तायफुन ब्लॉक-4, इससे कैसे बढ़ सकती है भारत की टेंशन

एजेंसी अंकारा

तुर्की ने पहली हाइपरसोनिक मिसाइल तायफुन ब्लॉक-4 को लॉन्च किया है। इस मिसाइल की लॉन्चिंग मंगलवार को इस्तांबुल में अंतर्राष्ट्रीय रक्षा उद्योग मेला (आईडीईएफ) 2025 के दौरान की गई। यह नई मिसाइल तुर्की की रक्षा क्षेत्र की दिग्गज कंपनी रोकेटसन द्वारा विकसित की गई है। यह तुर्की की स्वदेश निर्मित सबसे लंबी दूरी की बैलिस्टिक मिसाइल तायफुन का हाइपरसोनिक वेरिएंट है। हालांकि, तुर्की के साथ पाकिस्तान के संबंधों को देखते हुए इस मिसाइल से भारत की चिंता बढ़ सकती है। ऐसी आशंका है कि भारत के साथ तनाव के कारण पाकिस्तान इस मिसाइल की खरीद कर सकता है। टर्की टुडे की एक रिपोर्ट के अनुसार, तायफुन ब्लॉक 4 की लंबाई 6.5 मीटर, वजन 2,300 किलोग्राम और मारक क्षमता 800 किलोमीटर है। रोकेटसन ने एक बयान में कहा, "तायफुन ब्लॉक-4 लंबी दूरी तक मार करने में सक्षम है, जिसने तुर्की रक्षा उद्योग के लिए एक और रिकॉर्ड स्थापित किया है। 7 टन से ज्यादा वजनी, तायफुन का यह नया वेरिएंट अपने बहुउद्देश्यीय वारहेड के साथ, कई किलोमीटर दूर से ही दुश्मन के एयर डिफेंस सिस्टमों, कमांड एंड कंट्रोल सेंटरों, मिलिट्री हैंगरों और महत्वपूर्ण सैन्य सुविधाओं जैसे कई रणनीतिक लक्ष्यों को नष्ट करने में सक्षम होगा।" "हाइपरसोनिक" शब्द का इस्तेमाल अक्सर हाइपरसोनिक ग्लाइड वाहनों और हाइपरसोनिक क्रूज मिसाइलों के लिए किया जाता है। ये अत्यधिक उन्नत हथियार हैं और पृथ्वी के वायुमंडल के अंदर हाइपरसोनिक गति से उड़ान भरने में सक्षम होते हैं। काफी तेज गति से उड़ान भरने के कारण इन्हें ट्रैक करना और रोकना बहुत मुश्किल हो जाता है। हाइपरसोनिक मिसाइलें मैक 5 या ध्वनि की गति से पांच गुना (लगभग 3,800 मील प्रति घंटा, 6,100 किलोमीटर प्रति घंटा) की गति से चलती हैं। लेकिन विशेषज्ञों का मानना है कि लगभग सभी बैलिस्टिक मिसाइलें अपनी उड़ान के दौरान, खासकर जब वे अपने लक्ष्यों की ओर गोता लगाती हैं, हाइपरसोनिक गति प्राप्त कर लेती हैं। तुर्की और पाकिस्तान के संबंध काफी मजबूत हैं। दोनों देश इस्लाम की बुनियाद पर अपनी दोस्ती को बनाए हुए हैं। इस कारण इनके बीच रक्षा संबंध भी लगातार मजबूत हुए हैं। पहलगाम में हुए आतंकवादी हमले के बाद जब भारत ने पाकिस्तान के खिलाफ सैन्य कार्रवाई की, तब भी तुर्की ने दिल खोलकर इस्लामाबाद की सैन्य मदद की थी। तुर्की ने सार्वजनिक बयान जारी कर पाकिस्तान का समर्थन भी किया था। इससे पहले भी पाकिस्तान के सशस्त्र बलों को अत्याधुनिक बनाने के लिए तुर्की लगातार बड़ी भूमिका निभा रहा है।

दुनिया में लगेगा सदी का सबसे बड़ा सूर्यग्रहण, 10 देशों में छाएगा अमावस्या के जैसा गुप अंधेरा! भारत में दिखेगा नजारा

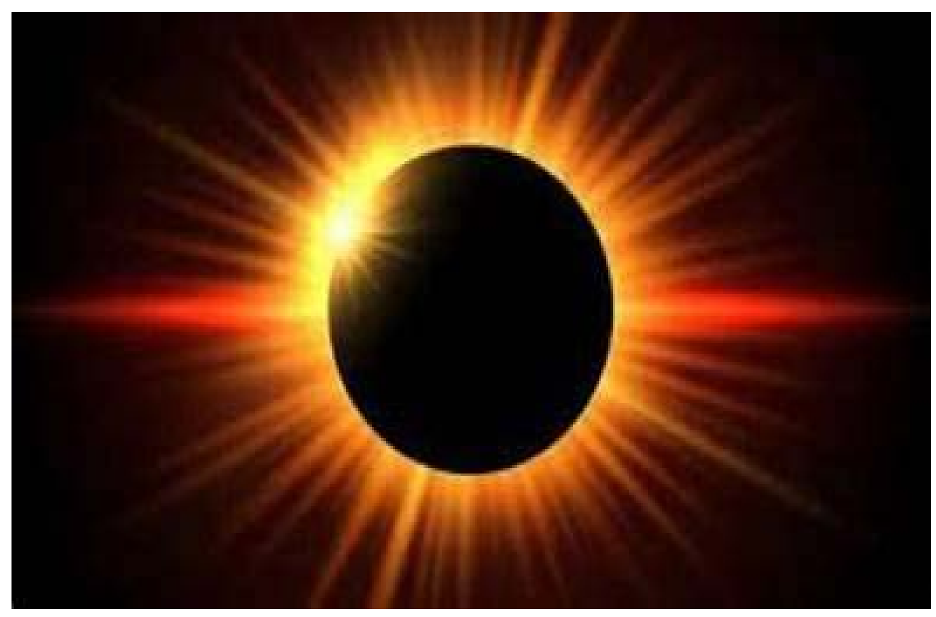

एजेंसी लंदन

प्रकृति की दुनिया हमेशा से इंसानों के समझ से परे की रही है। अगले हफ्ते एक बार फिर से प्रकृति इंसानों को अपना दुर्लभ चमत्कार दिखाने वाला है। वैज्ञानिकों को पता चला है कि 2 अगस्त 2027 को एक ऐसा सूर्य ग्रहण लगने जा रहा है, जिससे कम से कम 10 देशों में दिन के वक्त में रात जैसा नजारा होगा। रिपोर्ट के मुताबिक यूरोप, उत्तरी अफ्रीका और मध्य पूर्व के कुछ हिस्सों में दुर्लभ पूर्ण सूर्यग्रहण दिखाई देगा। वैज्ञानिकों से इसे असाधारण घटना करार दिया है। सबसे खास बात ये है कि इस सूर्यग्रहण का समय भी काफी ज्यादा होगा। वैज्ञानिकों का अनुमान है कि ये सूर्यग्रहण करीब 6 मिनट 23 सेकंड का रहने वाला है। ब्रिटिश अखबार मेट्रो की रिपोर्ट के मुताबिक यह 1991 और 2114 के बीच धरती से दिखाई देने वाले सबसे लंबे पूर्ण सूर्यग्रहणों में से एक होगा। वैज्ञानिकों ने इसे इस सदी की एक महत्वपूर्ण खगोलीय घटना बताया है। मेट्रो की रिपोर्ट के मुताबिक साल 2027 का पूर्ण सूर्य ग्रहण एक दुर्लभ घटना होगी, जिसमें सूर्य पूरी तरह से चंद्रमा के पीछे छिप जाएगा। पता चला है कि इस सूर्यग्रहण के दौरान एक ऐसा वक्त आएगा, जब सूर्य बिल्कुल भी नहीं दिखेगा और धरती पर पूरी तरह से रात जैसा नजारा होगा। उस वक्त चंद्रमा, सूर्य की किरणों को पूरी तरह से पृथ्वी पर आने से रोक देगा और जिन जिन देशों में सूर्यग्रहण लगा रहेगा, बारी बारी से हर देश में रात के जैसा नजारा बनता चला जाएगा। इससे दिन के आकाश में कुछ समय के लिए गुप अंधेरा छा जाएगा। वैज्ञानिकों के मुताबिक इस सूर्यग्रहण का असर मोरक्को, अल्जीरिया, ट्यूनीशिया, लीबिया, मिस्र, सूडान, सऊदी अरब, यमन और सोमालिया सहित कई देशों में दिखाई देगी। फिलहाल भारत में इस सूर्यग्रहण के दिखाई देने की संभावना नहीं है। रॉयल म्यूजियम ग्रीनविच के सीनियर खगोलशास्त्री ग्रेग ब्राउन ने कहा है कि यह ग्रहण छह मिनट तक चलेगा, जो इस तरह की ब्रह्मांडीय घटना के लिए असाधारण रूप से लंबा समय है। ग्रेग ब्राउन के मुताबिक, यह ग्रहण 1991 से 2114 तक के बीच का सबसे लंबा पूर्ण सूर्यग्रहण होगा। आमतौर पर पूर्ण सूर्यग्रहण कुछ सेकंड से लेकर 4-5 मिनट तक रहते हैं, लेकिन 2027 का यह ग्रहण 6 मिनट से भी ज्यादा समय तक चलेगा। उन्होंने कहा कि "सूर्य और चंद्रमा की दूरी में लगातार हल्का-फुल्का परिवर्तन होता रहता है, जिसकी वजह से ग्रहण की अवधि कम-ज्यादा हो सकती है।" आपको बता दें कि जब चंद्रमा, पृथ्वी और सूर्य के बीच आ जाता है और सूर्य की रोशनी को पूरी तरह से ढक लेता है, तब पूर्ण सूर्यग्रहण होता है। यह सिर्फ अमावस्या के दिन ही संभव होता है और तब भी, तभी जब चंद्रमा की कक्षा और पृथ्वी की स्थिति एकदम सीधी रेखा में हो। सूर्यग्रहण भी तीन प्रकार के होते हैं। पूर्ण सूर्यग्रहण के समय चंद्रमा, सूर्य को पूरी तरह ढक लेता है। आंशिक सूर्यग्रहण के दौरान सूर्य का कुछ हिस्सा ढका होता है। जबकि वलयाकार सूर्यग्रहण के दौरान, चंद्रमा छोटा दिखता है और सूर्य का एक चमकीला "रिंग ऑफ फायर" दिखाई देता है।

मिस्र में मिली रहस्यमय प्राचीन किताब, पुरातत्वविदों ने 3500 साल पुराने कब्रिस्तान में खोजी 'बुक ऑफ द डेड', होंगे नए खुलासे

एजेंसी काहिरा

मिस्र के पुरातत्वविदों ने 3,500 साल पुराना एक कब्रिस्तान खोजा है। इसमें उनको कई ममी, मूर्तियां और दूसरी महत्वपूर्ण चीजें मिली हैं। इस खोज में सबसे खास बुक ऑफ द डेड यानी मृतकों की पुस्तक की प्रति है। यह एक 43 फीट लंबे पपीरस स्क्रॉल पर लिखी गई है। यह एक दुर्लभ और महत्वपूर्ण खोज है। इसे प्राचीन मिस्र के ग्रंथों का संग्रह माना जाता है। इसे जीवन और आत्मा के मार्गदर्शन से जोड़ा जाता है। लाइव साइंस के मुताबिक, इस खोज के बाद कहा जा रहा है कि प्राचीन मिस्रवासी निश्चित रूप से जानते थे कि दफनाने की विधि क्या होती है। इसमें मृतक के अंगों को रखने के लिए कैनोपिक जार और बुक ऑफ द डेड से स्क्रॉल शामिल होते थे। ये इसलिए होता था ताकि मृतक को परलोक में आगे बढ़ने में मदद मिल सके। मध्य मिस्र में खोजे गए 3,500 साल पुराना ये कब्रिस्तान ममियों, ताबीजों, मूर्तियों, कैनोपिक जार और 43 फुट लंबे पपीरस स्क्रॉल से भरा है। यह स्क्रॉल अल-गुरैफा क्षेत्र में पाया गया पहला पूर्ण पपीरस है। खास बात ये है कि यह काफी अच्छी स्थिति में होने की विशेषता है। मिस्र की सर्वोच्च पुरावशेष परिषद के महासचिव मुस्तफा वजीरी ने इसकी जानकारी दी है। वजीरी का कहना है कि यह कब्रिस्तान 1550 ईसा पूर्व से 1070 ईसा पूर्व के बीच का है। यह अपनी पुरातात्विक खोजों के लिए जाना जाता था लेकिन बुक ऑफ द डेड की प्रति की खोज ने विशेषज्ञों का ध्यान खींचा है। इस पुस्तक को 43 से 49 फीट लंबा माना जाता है। इसकी सामग्री के बारे में अभी तक जनता के लिए बहुत कम विवरण उपलब्ध है।

जर्मनी के रोमर और पेलिजेअस संग्रहालय की सीईओ लारा वीस ने लाइव साइंस को बताया कि अगर यह इतना लंबा और अच्छी तरह से संरक्षित है तो निश्चित रूप से एक शानदार और दिलचस्प खोज है। शिकागो विश्वविद्यालय के मिस्र विज्ञानी फॉय स्कॉल्फ ने कहा कि यह बहुत दुर्लभ है कि जिस कब्र में इसे मूल रूप से दफनाया गया था, वहां इसकी एक प्रति मिल जाए।

सचिन और गावस्कर के साथ लिया जाएगा केएल राहुल का नाम, फिफ्टी से चूकने के बाद भी दिग्गजों की लिस्ट में एंट्री

एजेंसी मैनचेस्टर

केएल राहुल टेस्ट में भारतीय टीम के प्रमुख बल्लेबाज बन चुके हैं। आलोचक राहुल के प्रदर्शन में निरंतरता की कमी को लेकर सवाल खड़े करते हैं। लेकिन इंग्लैंड के दौरे पर उनका प्रदर्शन अभी तक कमाल का रहा है। शुरुआती तीन मैचों में राहुल ने दो शतक ठोके। मैनचेस्टर में खेले जा रहे सीरीज के चौथे मुकाबले में उन्होंने टीम की बेहतरीन शुरुआत दिलाई। बल्लेबाजी के लिए मुश्किल विकेट पर राहुल ने पहले विकेट के लिए यशस्वी जायवाल के साथ 94 रन जोड़े। इंग्लैंड की परिस्थिति बल्लेबाजी के लिए सबसे मुश्किल मानी जाती है। इसके बाद भी केएल राहुल ने टेस्ट में वहां एक हजार रन पूरे कर लिए हैं। अपने 13वें टेस्ट की 25वीं पारी में राहुल ने 1000 रन बनाए। उनके इंग्लैंड में 1035 रन हैं। इस दौरान राहुल का औसत 41.40 का रहा है। इस दौरान उनके बल्ले से 4 शतक निकले हैं। 2018 में राहुल ने यहां पहला टेस्ट खेला था। केएल राहुल इंग्लैंड में एक हजार टेस्ट रन बनाने वाले भारत के पांचवें बल्लेबाज बन गए हैं। वहीं सलामी बल्लेबाजों में सिर्फ सुनील गावस्कर ने यह कारनामा किया है। गावस्कर के अलावा इंग्लैंड में सचिन तेंदुलकर, राहुल द्रविड़ और विराट कोहली के नाम भी 1000 से ज्यादा रन हैं।

इंग्लैंड में सबसे ज्यादा टेस्ट रन बनाने वाले भारतीय बल्लेबाज

सचिन तेंदुलकर- 1575 (30 पारी)
राहुल द्रविड़- 1376 (23 पारी)
सुनील गावस्कर- 1152 (28 पारी)
विराट कोहली- 1096 (33 पारी)
केएल राहुल- 1035 (25 पारी)

अर्धशतक लगाने से चूके राहुल

मैनचेस्टर के ओल्ड ट्रैफर्ड मैदान पर केएल राहुल के पास अर्धशतक लगाने का मौका था लेकिन वह चूक गए। लंच ब्रेक के बाद वह 46 रनों की पारी खेलकर पवेलियन लौटे। 98 गेंद पर क्रीज पर रहे और इस दौरान 4 चौके मारे। इंग्लैंड के तेज गेंदबाज क्रिस वोक्स को उनका विकेट मिला। स्लिप में राहुल ने जैक क्राउली को कैच दे दिया।

वीनस विलियम्स का जवाब नहीं, 45 की उम्र में बनाया ऐसा रिकॉर्ड... सिर्फ एक खिलाड़ी है ऊपर

एजेंसी नई दिल्ली

अमेरिका की दिग्गज टेनिस खिलाड़ी वीनस विलियम्स भले ही 45 साल की हो गई हों लेकिन उन्हें देखकर ऐसा लगता है कि उनके अंदर अभी भी काफी टेनिस बचा हुआ है। वीनस इस वक्त डीसी ओपन टेनिस टूर्नामेंट में खेल रही हैं। वहां उन्होंने एक मैच जीतते ही इतिहास रच दिया है। वीनस विलियम्स पेशेवर टेनिस में टूर-स्तरीय एकल मैच जीतने वाली दूसरी सबसे उम्रदराज महिला बन गई हैं। सात बार की ग्रैंड स्लैम चैंपियन वीनस ने 45 साल की उम्र में अपने कुछ चिर परिचित सर्व और ग्राउंडस्ट्रोक का शानदार नजारा पेश किया और डीसी ओपन टेनिस टूर्नामेंट में अपने से 22 वर्ष छोटी पीटन स्टर्न्स को 6-3, 6-4 से हराया। वीनस से अधिक उम्र में महिला एकल का मैच केवल मार्टिना नवरातिलोवा ने जीता है। नवरातिलोवा ने आखिरी बार 2004 में 47 वर्ष की उम्र में एकल मैच में जीत हासिल की थी। उन्होंने मैच के बाद कहा, 'जब मैं अभ्यास कर रही थी तो सोच रही थी कि हे भगवान, मुझे नहीं पता कि मैं अब भी अच्छी खिलाड़ी हूं या नहीं। फिर कुछ ऐसे मौके भी आते थे जब मुझे खुद पर भरोसा होता था। यहां तक कि पिछले सप्ताह भी मैं सोच रही थी कि मुझे अपने खेल में सुधार करने की जरूरत है। इसलिए यह पूरा दिमाग का खेल है।' वीनस एक साल से भी अधिक समय बाद किसी टूर्नामेंट में भाग ले रही है। इससे पहले उन्होंने युगल मैच जीतकर शानदार वापसी की थी। अब उन्होंने दो वर्षों में पहली बार एकल मैच जीता है।

भारत और इंग्लैंड के मैच में पाकिस्तानी अंपायर, आतंकियों ने लाहौर में मारी थी गोली, मुश्किल से बची थी जान

एजेंसी मैनचेस्टर

भारतीय टीम ओल्ड ट्रैफर्ड के मैदान पर इंग्लैंड का सामना कर रही है। 5 मैचों की सीरीज का यह चौथा मुकाबला है। बेन स्टोक्स ने टॉस जीतकर पहले गेंदबाजी करने का फैसला किया। इस मैच में पूरा अंपायर पैनल बदल गया है। मैदानी अंपायर की भूमिका में रोड टकर के साथ अहसान रजा हैं। वहीं थर्ड अंपायर की जिम्मेदारी श्रीलंका के कुमार धर्मसेना निभा रहे हैं। वहीं जेफ क्रो मैच रेफरी की भूमिका में हैं। भारत और पाकिस्तान के बीच रिश्ते ठीक नहीं चल रहे हैं। पहलगाम में आंतकी हमले के बाद भारत ने ऑपरेशन सिंदूर चलाया। वर्ल्ड चैंपियनशिप ऑफ लीजेंड्स में भारत और पाकिस्तान का मैच रद्द कर दिया गया। सोशल मीडिया पर विरोध की वजह से मैच नहीं खेला गया। अब भारत और इंग्लैंड के मैच में पाकिस्तानी अंपायर मैदान पर अंपायरिंग कर रहा है। रोड टकर ऑस्ट्रेलिया तो एहसान रजा पाकिस्तान के हैं। आईसीसी एलीट पैनल में अहसान रजा का नाम शामिल है। 2023 में उन्हें इस पैनल में जगह मिली थी। 51 साल के अहसान रजा ने पाकिस्तान में घरेलू क्रिकेट खेले चुके हैं। उन्होंने 21 फर्स्ट क्लास और 4 लिस्ट ए मैच खेले। यह टेस्ट मैच में अंपायर के रूप में उनका 35वां मुकाबला है। इस दौरान 22 बार वह मैदान पर रहे जबकि 13 बार टीवी अंपायर की भूमिका निभाई। इसके अलावा 83 वनडे और 111 टी20 इंटरनेशनल में अंपायरिंग कर चुके हैं। उन्होंने 34 महिला इंटरनेशनल मैचों में भी अंपायरिंग की जिम्मेदारी संभाली है। 3 मार्च 2009 को लाहौर में श्रीलंकाई क्रिकेट टीम पर हुए हमले में अहसान रजा घायल हो गए। उन्हें दो गोलियां लगीं और वे लाहौर के एक अस्पताल में गंभीर हालत में भर्ती थे। वह 2010 से इंटरनेशनल क्रिकेट में अंपायरिंग कर रहे हैं। अहसान टी20 इंटरनेशनल में 50 मुकाबलों में मैदानी अंपायर की भूमिका निभाने वाले पहले ऑफिशियल हैं। रजा 2023 विश्व कप और 2024 टी20 विश्व कप में भी अंपायर की भूमिका में थे।

क्रिस वोक्स ने सिर्फ 126 kmph की रफ्तार वाली गेंद से बैट के कर दिए दो टुकड़े, यशस्वी जायसवाल यूं देखते रह गए

एजेंसी मैनचेस्टर

भारतीय क्रिकेट फैंस और टीम के स्टार ओपनर यशस्वी जायसवाल उस वक्त हैरान रह गए, जब क्रिस वोक्स की एक तूफानी गेंद ने उनके बल्ले को तोड़ दिया। गेंद बैट के हैंडल पर लगी थी और वहीं से वह टूट गई। इसके बाद यशस्वी जायसवाल बड़ी हैरानी से बल्ले को चेक करते रहे और कुछ देर बाद उन्होंने ड्रेसिंग रूम की ओर इशारा किया। इस पर करुण नायर 3-4 बैट लेकर दौड़ते हुए मैदान पर पहुंचे। इसके बाद यशस्वी जायसवाल ने बल्ला बदला। यह सब हुआ पारी के 9वें ओवर की 5वीं गेंद पर। दरअसल, मैच के शुरू होने से पहले मैनचेस्टर में हैवी बारिश हुई थी तो इंग्लिश पेसर ने अभियान की रणनीति के तहत पेस पर भरोसा जताया। वोक्स और जोफ्रा आर्चर ने गेंद को थोड़ा तेज फेंका। हालांकि, जिस गेंद पर यशस्वी जायसवाल का बैट टूटा उसकी रफ्तार सिर्फ 126 किमी थी। क्रिस वोक्स ने गुड लेंथ की बॉल की। गेंद टप्पा खाने के बाद डिफेंसिव स्ट्रोक खेलने की कोशिश कर रहे यशस्वी के बल्ले के ऊपरी हिस्से पर लगी और बल्ला टूट गया। यहां कुछ देर के लिए मैच रोकना पड़ा। करुण नायर बल्ले लेकर मैदान पर पहुंचे उसके बाद मैच शुरू हो सका। इससे पहले इंग्लैंड के कप्तान बेन स्टोक्स ने भारत के खिलाफ चौथे क्रिकेट टेस्ट में टॉस जीतकर पहले गेंदबाजी करने का फैसला किया। चोटों से जूझ रहे भारत ने तीन बदलाव करते हुए करुण नायर, नीतीश रेड्डी और आकाशदीप की जगह साई सुदर्शन, शार्दुल ठाकुर और पदार्पण कर रहे अंशुल कंबोज को टीम में शामिल किया है। इंग्लैंड ने भी एक बदलाव करते हुए लाड्र्स में तीसरे टेस्ट के दौरान चोटिल हुए शोएब बशीर की जगह स्पिनर लियान डॉसन को टीम में जगह दी है। इंग्लैंड पांच मैच की श्रृंखला में 2-1 से आगे है।

फारुख इंजीनियर के नाम मैनचेस्टर में बना स्टैंड, सचिन तेंदुलकर के बाद विदेश में यह सम्मान पाने वाले दूसरे भारतीय

एजेंसी नई दिल्ली

भारत के पूर्व दिग्गज विकेटकीपर बल्लेबाज फारुख इंजीनियर के नाम मैनचेस्टर के ओल्ड ट्रैफर्ड में स्टैंड का अनावरण किया गया है। फारुख पहले भारतीय क्रिकेटर बने हैं, जिनके नाम पर ओल्ड ट्रैफर्ड में स्टैंड बना है। यह सम्मान उन्हें लंकाशायर क्लब के लिए उनके योगदान के लिए दिया गया, जिसके लिए उन्होंने लगभग एक दशक तक खेला। फारुख के अलावा वेस्टइंडीज के पूर्व कप्तान क्लाइव लॉयड लगभग भी दो दशक तक इस क्लब के साथ रहे। ऐसे में उनके नाम पर भी ओल्ड ट्रैफर्ड में स्टैंड का अनावरण किया गया है। बता दें कि फारुख इंजीनियर सिर्फ दूसरे ऐसे भारतीय क्रिकेटर बने हैं, जिनके नाम देश के बाहर किसी स्टेडियम में स्टैंड बना है। उनसे पहले सचिन तेंदुलकर के नाम यूएई के शारजाह क्रिकेट स्टेडियम में स्टैंड का अनावरण किया गया था। ऐसे में अब फारुख इंजीनियर को यह सम्मान मिला है। फारुख 1968 से 1976 के बीच 87 साल के इंजीनियर ने 175 मैचों में लंकाशर के लिए 5942 रन बनाए, 429 कैच लिए और 35 स्टंपिंग की। वहीं टीम इंडिया के लिए फारुख इंजीनियर के करियर की बात करें तो वह टेस्ट और वनडे को मिलाकर 51 मैचों में मैदान पर उतरे। टेस्ट क्रिकेट में उन्होंने 2611 रन बनाए, जिसमें 2 शतक 16 अर्धशतक लगाए। इसके अलावा वनडे में उनके नाम सिर्फ 114 रन है। बल्लेबाजी के अलावा फारुख इंजीनियर भारत के सबसे बेहतरीन विकेटकीपर में से एक रहे हैं। इंग्लैंड के खिलाफ टेस्ट सीरीज की बात करें तो भारतीय टीम 2-1 से पीछे है। वहीं चौथे टेस्ट मैच में टीम इंडिया को टॉस हारने के बाद पहले बल्लेबाजी का न्योता है। भारतीय टीम ने इंग्लैंड के खिलाफ इस चौथे टेस्ट मैच में तीन बदलाव किए हैं। प्लेइंग इलेवन में शार्दुल ठाकुर और साई सुदर्शन की वापसी हुई है जबकि अंशुल कंबोज को टीम इंडिया के लिए डेब्यू का मौका मिला है।

व्यापार

ठग गया जापान, भारत और चीन एक कश्ती पर सवार... डील के बहाने क्या धोखा कर रहा अमेरिका

एजेंसी नई दिल्ली

अमेरिका और जापान के बीच हुए व्यापार समझौते ने दुनिया में हलचल मचा दी है। अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप की घोषणा ने साबित कर दिया है कि इस डील में जापान को बुरी तरह से ठगा गया है। जिस 'बड़ी डील' होने की बात की गई है, उसमें सिर्फ अमेरिका को ही फायदा दिख रहा है। इसमें जापानी आयातों पर 15% अमेरिकी टैरिफ और अमेरिका में 550 अरब डॉलर के निवेश की योजना शामिल है। यह समझौता ऐसे समय में हुआ है जब ट्रंप प्रशासन व्यापार वार्ताओं को जल्द से जल्द पूरा करने का दबाव डालने में लगे हैं। इसके लिए 1 अगस्त की टैरिफ समय-सीमा फिक्स की गई है। इस मामले में भारत और चीन एक कश्ती पर सवार हैं। दोनों की कई मुद्दों पर अमेरिका से बातचीत फाइनल नहीं हो पाई है। डेडलाइन के बाद उन तमाम देशों पर टैरिफ की तलवार लटक रही है जिनसे समझौते नहीं हुए हैं। अमेरिका डील के बहाने दादागिरी पर उतारू है। ऐसे में भारत को बहुत ज्यादा चौकन्ना रहने की जरूरत है। भारत और चीन दोनों ने अभी तक अमेरिका के साथ व्यापार समझौते नहीं किए हैं। इस तरह ये दोनों एक ही कश्ती पर सवार हैं। वे अपनी मांगों पर अड़े हुए हैं, जबकि जापान ने अमेरिका के दबाव के आगे झुककर समझौता कर लिया है। जापान के साथ अमेरिका का समझौता भारत के लिए कई महत्वपूर्ण सबक और संभावित चिंताएं पैदा करता है। ट्रंप ने पहले जापान को चेतावनी दी थी। उन्होंने कहा था कि व्यापार वार्ता विफल होने की स्थिति में अमेरिका जापान पर 25% टैरिफ लगाएगा। जापान का 15% टैरिफ पर सहमत होना और 550 अरब डॉलर का निवेश करना यह दर्शाता है कि अमेरिकी दबाव की रणनीति जापान पर काम कर गई। अमेरिका ने फिलीपींस (19% टैरिफ) और इंडोनेशिया (19% टैरिफ) के साथ भी ऐसे ही समझौते किए हैं। वहां अमेरिकी उत्पादों पर कोई आयात शुल्क नहीं लगाया गया। यह भारत के लिए एक चेतावनी है कि अमेरिका भारत पर भी इसी तरह का दबाव डाल सकता है ताकि वह अपनी मांगों से पीछे हटे। चूंकि भारत और चीन दोनों ने अभी तक अमेरिका के साथ समझौते नहीं किए हैं और अपनी मांगों पर अड़े हुए हैं, यह उनकी व्यापारिक वार्ताओं में एक मजबूत स्थिति को दर्शाता है। जापान के झुकने के बाद अमेरिका का ध्यान अब उन देशों पर अधिक केंद्रित हो सकता है जो अभी भी उसकी शर्तों को स्वीकार नहीं कर रहे हैं। भारत को अपनी स्थिति पर कायम रहना होगा और यह सुनिश्चित करना होगा कि कोई भी समझौता उसके राष्ट्रीय हितों के अनुरूप हो, न कि केवल अमेरिकी एजेंडे को पूरा करने वाला। ट्रंप के बयान में कहा गया है कि जापान 'मेरे निर्देश पर अमेरिका में 550 अरब डॉलर का निवेश करेगा, जिसमें से 90% लाभ अमेरिका को मिलेगा।' यह एक बहुत ही असामान्य निवेश व्यवस्था है। हालांकि, इसका ब्योरा अभी स्पष्ट नहीं है। अगर अमेरिका भारत के साथ भी ऐसे ही 'असामान्य' निवेश या व्यापारिक शर्तों का प्रस्ताव करता है तो भारत को बहुत सावधानी से उनका मूल्यांकन करना होगा। 'लाभ का 90%' जैसा प्रावधान भारत के लिए चिंता का विषय हो सकता है। यह विदेशी निवेश के पारंपरिक सिद्धांतों के विपरीत है। भारत की आर्थिक संप्रभुता को भी यह प्रभावित कर सकता है।

सोना-चांदी बने रॉकेट, दोनों में किसने 4,000 रुपये उछलकर बनाया रिकॉर्ड, आगे क्या हैं संकेत

एजेंसी नई दिल्ली

दिल्ली के सराफा बाजार में चांदी की कीमतों में भारी उछाल आया है। स्टॉकिस्टों की खरीदारी के कारण बुधवार को चांदी 4,000 रुपये उछलकर 1,18,000 रुपये प्रति किलोग्राम के रिकॉर्ड स्तर पर पहुंच गई। सोने की कीमतों में भी तेजी रही और यह 1,000 रुपये बढ़कर 1,01,020 रुपये प्रति 10 ग्राम हो गया। वैश्विक अनिश्चितता और औद्योगिक मांग में तेजी के कारण सोने और चांदी की कीमतों में यह इजाफा हुआ है। निवेशकों को अब अमेरिका, ब्रिटेन और यूरो क्षेत्र के पीएमआई आंकड़ों का इंतजार है। इससे भविष्य में कीमतों की दिशा का पता चल सकता है। अखिल भारतीय सराफा संघ के अनुसार, 99.9 फीसदी शुद्धता वाला सोना 1,000 रुपये महंगा होकर 1,01,020 रुपये प्रति 10 ग्राम (सभी टैक्स सहित) पर पहुंच गया। पिछले कारोबारी सत्र में यह 1,00,020 रुपये प्रति 10 ग्राम पर बंद हुआ था। इसका मतलब है कि सोने की कीमतों में अच्छी खासी बढ़ोतरी हुई है। वहीं, 99.5 फीसदी प्योरिटी वाला सोना भी 900 रुपये बढ़कर 1,00,450 रुपये प्रति 10 ग्राम (सभी टैक्स सहित) हो गया। पिछले कारोबारी सत्र में यह 99,550 रुपये प्रति 10 ग्राम पर बंद हुआ था। इससे पता चलता है कि सोने की शुद्धता के आधार पर कीमतों में थोड़ा अंतर रहा। एचडीएफसी सिक्योरिटीज के वरिष्ठ विश्लेषक (कमोडिटी) सौमिल गांधी ने सोने की कीमतों में बढ़ोतरी के बारे में बताया। उन्होंने कहा, 'वैश्विक अनिश्चितता बढ़ने के साथ सोने की मांग बनी हुई है। इसका मुख्य कारण एक अगस्त की समयसीमा से पहले व्यापार समझौता होने की घटती उम्मीदें हैं।' यानी दुनिया भर में जो अनिश्चितता का माहौल है, उसकी वजह से लोग सोने में निवेश करना पसंद कर रहे हैं। उन्हें लग रहा है कि 1 अगस्त तक व्यापार समझौता होने की संभावना कम है। गांधी ने आगे कहा कि इस अनिश्चितता ने बाजार की चिंता बढ़ा दी है। इससे सुरक्षित निवेश की ओर रुझान बढ़ रहा है। उन्होंने यह भी कहा कि अमेरिकी डॉलर में कमजोरी से भी कीमती धातु को समर्थन मिल रहा है। इसका मतलब है कि बाजार में डर का माहौल है और लोग सुरक्षित जगहों पर निवेश करना चाहते हैं। डॉलर के कमजोर होने से भी सोने को फायदा मिल रहा है। चांदी की बात करें तो राष्ट्रीय राजधानी में मंगलवार को यह 3,000 रुपये बढ़कर 1,14,000 रुपये प्रति किलोग्राम पर बंद हुई थी। पिछले तीन सत्रों में इसमें 7,500 रुपये प्रति किलोग्राम की बढ़ोतरी हुई थी। बुधवार को इसमें 4,000 रुपये का और इजाफा हुआ। इससे पता चलता है कि चांदी की कीमतों में भी लगातार तेजी बनी हुई है। सराफा कारोबारियों का कहना है कि चांदी में तेजी का मौजूदा रुझान मुख्य रूप से औद्योगिक मांग से प्रेरित है। इसका मतलब है कि उद्योगों में चांदी की मांग बढ़ रही है, जिसके कारण इसकी कीमतें बढ़ रही हैं। मल्टी कमोडिटी एक्सचेंज (MCX) पर सितंबर सप्लाई के लिए चांदी वायदा 896 रुपये यानी 0.77 फीसदी बढ़कर 1,16,551 रुपये प्रति किलोग्राम के नए रिकॉर्ड स्तर पर पहुंच गया। हालांकि, कमोडिटी एक्सचेंज में अगस्त सप्लाई के लिए सोना वायदा 24 रुपये गिरकर 1,00,305 डॉलर प्रति 10 ग्राम पर आ गया। इससे पता चलता है कि वायदा बाजार में भी चांदी की मांग तेज है, जबकि सोने में थोड़ी गिरावट देखी गई।

इंफोसिस के शेयरधारकों को मिली अच्छी खबर, इस साल पहली तिमाही में बढ़ी कमाई भी

एजेंसी मुंबई

आईटी सेक्टर (IT Sector) में देश की दूसरी बड़ी कंपनी इंफोसिस (Infosys) ने इस साल की पहली तिमाही के परिणाम जारी कर दिए हैं। इस अवधि के दौरान कंपनी को 6,921 करोड़ रुपये का मुनाफा हुआ है। यह पिछले साल की इसी तिमाही के मुकाबले 9% ज्यादा है। इसी के साथ अब कंपनी की कमाई 8% बढ़कर 42,279 करोड़ रुपये पर पहुंच गई है। आईटी सेक्टर की दिग्गज कंपनी इंफोसिस ने इसी के साथ वित्त वर्ष 2025-26 के लिए अपनी कमाई का अनुमान थोड़ा बढ़ा दिया है। अब कंपनी को 1-3% की ग्रोथ की उम्मीद है। यह ग्रोथ स्थिर मुद्रा या Constant Currency टर्म में आंकी गई है। इंफोसिस के CEO और MD सलिल पारेख ने इस अवसर पर कहा "Q1 में हमारा प्रदर्शन हमारी AI क्षमताओं को दिखाता है। हमने क्लाइंट को साथ लेकर चलने में सफलता पाई है। हमारे 300,000 से ज्यादा कर्मचारियों ने कड़ी मेहनत की है।" इस साल की पहली तिमाही के दौरान स्थिर मुद्रा (CC) के हिसाब से कंपनी की कमाई 3.8% बढ़ी है। यह पिछली तिमाही के मुकाबले यह 2.6% ज्यादा है। कंपनी ने इस दौरान $3.8 बिलियन के सौदे किए हैं। इनमें से 55% नए सौदे हैं। इस पर पारेख ने आगे कहा, "हमें जो बड़ी डील मिली है वे हमारी मजबूत स्थिति और क्लाइंट के साथ अच्छे संबंधों को दर्शाते हैं।" इस दौरान कंपनी का ग्रॉस प्रॉफिट भी बढ़कर 13,055 करोड़ रुपये हो गया है। पिछले साल इसी तिमाही में यह 12,138 करोड़ रुपये था। इस साल अप्रैल-जून की तिमाही में कंपनी का ऑपरेटिंग मार्जिन 20.8% रहा है। यह पिछले साल के मुकाबले 0.3% और पिछली तिमाही के मुकाबले 0.2% कम है। कंपनी को उम्मीद है कि FY26 में यह 20-22% के आसपास रहेगा। सेगमेंट के हिसाब से देखें तो फाइनेंशियल सर्विसेज में 5.6% की ग्रोथ हुई है। मैन्युफैक्चरिंग डिवीजन में 12.2% की अच्छी ग्रोथ हुई है। रिटेल में 0.4% की मामूली ग्रोथ हुई, जबकि हाई-टेक बिजनेस में 1.7% की ग्रोथ हुई। लाइफ साइंसेज और अन्य डिवीजनों में क्रमशः 7.9% और 15.3% की गिरावट आई है।

भगवान शिव की लीला, अप्सरा को देखने के लिए हुए पंचमुख, प्रकट हुआ तीसरा नेत्र

भगवान शिव की आरती करते हुए आपने कई बार शिवजी को पंचानन कहा होगा यानी जिनके पांच मुख है। शिवजी का पांच मुख के साथ प्रकट होना शिवलीला का एक भाग है जिसमें शिवजी ने अपनी योग शक्ति और दिव्य माया को प्रकट किया है। और इसकी भी एक रोचक कथा है। शिवजी के पंचमुख होने की कथा का जिक्र महाभारत के अनुशासन पर्व में बताया गया है इसके अलावा भी कई स्थानों पर पंचमुख शिव का वर्णन मिलता है। और इस कथा में एक अप्सरा का नाम भी आता है जिनकी सुंदरता ने जग को मोहित कर लिया था। ब्रह्माजी ने भगवान शिव की प्रेरणा से ही सृष्टि की सबसे उत्तम और सुंदरतम वस्तुओं को लेकर एक स्त्री का निर्माण किया और उसे नाम मिला तिलोत्तमा अप्सरा। और इसी अप्सरा के कारण भगवान शिव को अपनी लीला में पंचमुख रूप धारण करना पड़ा।सुंद और उपसुंद नामक दो असुर थे जिनके पराक्रम से सृष्टि में भय का माहौल बन गया था। देवगण भयभीत होकर भटक रहे थे। ऐसे में शिवजी की प्रेरणा से ब्रह्माजी ने असुरों के नाश के लिए एक दिव्य सुंदरी अप्सरा का निर्माण किया। उन्होंने इसके लिए संसार सृष्टि में जो भी सबसे सुंदर वस्तु थी उन सभी को एकत्रित किया और फिर उससे तिल-तिल सुंदरतम सौदर्य प्रतिमा का निर्माण किया और वह सौदर्य की मूर्ति बनकर प्रकट हुए अप्सरा तिलोत्तमा। तिलोत्तमा को देखकर देवतागण भी सम्मोहित होने लगे। इस विषय में वर्णित है कि जब तिलोत्तमा का जन्म हुआ था तो उन्हें दो असुर भाई सुंद और उपसुंद को अपने सौंदर्य से मोहि करके उनका अंत करने का कार्य दिया गया। तिलोत्तमा सौंपे गए कार्य को स्वीकार करते हुए दिव्य सभा की परिक्रमा करने लगी। जैसे-जैसे तिलोत्तमा दिव्य सभा की परिक्रमा करती गई उन्होंने अपने मनमोहक सौंदर्य से देवताओं, गंधर्व और ऋषियों सभी को मोहित और स्तब्ध कर दिया। उनके जब तिलोत्तमा भगवान शिव के प्रति सम्मान प्रकट करने क लिए उनकी परिक्रमा करने के लिए आगे बढ़ी। तब भगवान शिव अपनी लीला दिखाते हुए अपने चार मुख प्रकट किए, कई कथाओं में कहा गया है कि शिव इस समय पंचमुख भी हो गए थे। लेकिन भगवान शिव की इस लीला से देवी पार्वती क्रोधित हो गई थीं। भगवान शिव को पंचमुखी होने के साक्षी नारदजो ने जब पूरा वाक्या

माता पार्वती से कहा तो वह बहुत क्रोधित हुई। माता पार्वती इतनी क्रोधित हुई की उन्होंने तुरंत ही अपनी हथेली से भगवान शिव की आंखो को ढक दिया। जैसे ही माता पार्वती ने भगवान शिव की आंखे ढकी तो पूरे ब्राह्माण्ड में अंधकार फैल गया। पूरी सृष्टि प्रलय, विनाश से हाहाकार करने लगी। देवी, देवता माता पार्वती से शिवजी की आंखों से हाथ हटाने की प्रार्थना करने लगे। लेकिन माता पार्वती किसी का आग्रह नहीं मानीं और और संसार जीव त्राहिमाम करने लगे। भगवान शिव ने तब अपनी परम लीला को प्रकट किया और शिवजी की तीसरी आंख खुल गई जिससे सृष्टि में प्रकाश फैल गया। इसके बाद देवतागण भगवान शिव की वंदना त्र्यंबक और त्रिनेत्रधारी के नाम से करने लगे। इसके बाद क्रोधित देवी पार्वती सामने खड़ी तिलोत्तमा को देखती हैं और तिलोत्तमा को कुरूप हो जाने का शाप दे देती हैं। माता पार्वती के शाप के कारण तिलोत्तमा कुरूप हो जाती है। तिलोत्तमा अपने शरीर को देखकर घबरा जाती है और माता पार्वती से दया करने का आग्रह करती हैं। तिलोत्तमा के हृदय विदारक वचन सुनकर देवी पार्वती को बहुत पछतावा हुआ।

माता पार्वती ने अप्सरा तिलोत्तमा को पृथ्वी पर माघ मास के शुक्ल पक्ष की तृतीया को पवित्र स्नान के लिए हटकेश्वर तीर्थ स्थल पर ले जाती गईं। यहां अप्सरा तिलोत्तमा देवी पार्वती के शाप से मुक्त हो गईं और फिर से तिलोत्तमा को अपनी सुंदरता वापस मिल गई।अप्सरा तिलोत्तमा स्वयं को उस पुराने आकर्षक स्वरूप में पाकर अत्यंत संतुष्ट और प्रसन्न हुईं। उन्होंने देवी पार्वती को उनकी उदारता के लिए धन्यवाद दिया और पृथ्वी लोक से ब्रह्म लोक वापस जाने की अनुमति मांगी। इससे पहले देवी पार्वती ने अप्सरा तिलोत्तमा से कहा कि वह कोई वरदान मांगे उनकी कोई एक इच्छा को वह पूरी कर देंगी। इसपर अप्सरा तिलोत्तमा ने हाटकेश्वर के पवित्र स्थल में उन्हें समर्पित एक तीर्थ की इच्छा व्यक्त की। उन्होंने आग्रह किया कि देवी पार्वती हर साल सभी स्त्रियों के कल्याण के लिए उस तीर्थ में पवित्र स्नान करना चाहिए, जिससे वहां स्नान करने वाली बाकी महिलाओं को भी सौंदर्य और वैवाहिक सुख प्राप्त हो।

अगस्त से दिसंबर तक इन मुहूर्त में करवा सकते हैं बच्चे का मुंडन, महत्व और शुभ तिथि

हिंदू धर्म में मुंडन संस्कार को बेहद पवित्र और अहम माना जाता है। यह बच्चे के जन्म के बाद पहली बार बाल काटने की एक परंपरा है। इसको चूड़ाकरण के नाम से भी जाना जाता है। धार्मिक मान्यता है कि यह संस्कार बच्चे को उसके पिछले जन्म के दोषों से मुक्त करता है और बच्चे को अच्छा स्वास्थ्य, समृद्धि और दीर्घायु प्रदान करता है। मुंडन संस्कार को सोलह संस्कारों में से एक माना जाता है। जोकि बच्चे की शुभ शुरूआत का प्रतीक होता है। वहीं धार्मिक और वैज्ञानिक दृष्टिकोण से भी यह अहम माना जाता है। क्योंकि यह बच्चे को शारीरिक और आत्मिक शुद्धता प्रदान रता है। मुंडन संस्कार बच्चे को निगेटिव एनर्जी या नुकसान से बचाने में सहायता करता है। वहीं इस तरह के रीति-रिवाजों को शुभ समय पर किया जाता है। जिससे कि इसका सकारात्मक प्रभाव पड़े और कोई बुरा असर न हो। इसके लिए लोग पंडितों से सलाह लेते हैं या ज्योतिषीय गणना के मुताबिक शुभ तिथि का चयन करते हैं। साल 2025 में मुंडन संस्कार के लिए कुछ विशेष तारीखें हैं जोकि सामान्य रूप से शुभ मानी जाती हैं। ऐसे में आज इस आर्टिकल के जरिए हम आपको जुलाई से दिसंबर तक कुछ सामान्य शुभ तिथियों के बारे में बताने जा रहे हैं, जोकि मुंडन संस्कार को अधिक फलदायी बनाती हैं। नवजात शिशु का मुंडन संस्कार आमतौर पर नवजात बच्चे का मुंडन संस्कार 1 से 3 साल की आयु में करना शुभ माना जाता है। विषम वर्षों में मुंडन संस्कार करना ज्यादा फलदायी माना जाता है। अगर 1 से 3 साल के बीच मुंडन संस्कार नहीं हो पाता है, तो यह संस्कार 5 से 7 साल की उम्र में भी किया जा सकता है। वहीं मंगलवार, शनिवार और अमावस्या तिथि को मुंडन संस्कार करने से बचना चाहिए। बता दें कि अगस्त से लेकर दिसंबर 2025 के बीच मुंडन संस्कार के लिए कोई विशेष शुभ मुहूर्त उपलब्ध नहीं है। क्योंकि इस दौरान पंचांग और नक्षत्रों की स्थिति मुंडन के लिए अनुकूल नहीं है। जिसकी वजह इस अवधि में मुंडन संस्कार से बचने की सलाह दी जाती है। वहीं कुछ लोग शारदीय नवरात्रि के समय भी मुंडन संस्कार कराते हैं, क्योंकि इसको शुभ और पवित्र समय माना जाता है। वहीं अगर आप अगस्त से दिसंबर के बीच मुंडन संस्कार कराने की योजना बना रहे हैं, तो आपको पहले ज्योतिषीय सलाह जरूर लेनी चाहिए।

हरियाली अमावस्या पर करें इनमें से कोई एक उपाय, भोलेनाथ जीवन से दूर कर देंगे दुर्भाग्य, बनेंगे धनवान

हिंदू धर्म में हरियाली अमावस्या का खास महत्व होता है। यह तिथि सावन के महीने में पड़ती है जिसके चलते इसे सावन अमावस्या के नाम से भी जाना जाता है। सावन शिवरात्रि के अगले दिन पड़ने वाली इस अमावस्या को नवग्रह शांति और पितरों की पूजा के लिए समर्पित माना जाता है। साथ ही, इस दिन भगवान शिव की पूजा करने का भी विधान बताया गया है। वहीं, इस बार हरियाली अमावस्या पर गुरु पुष्य योग, सर्वार्थ सिद्धि योग और अमृत सिद्धि योग बन रहे हैं। इन शुभ संयोग के बनने से यह तिथि और भी खास और फलदायी हो गई है। ऐसे में अगर आप हरियाली अमावस्या पर कुछ विशेष उपाय कर लें, तो इससे भगवान शिव की विशेष कृपा प्राप्त हो सकती है और धन-दौलत में भी वृद्धि होती है। आइए विस्तार से जानें हरियाली अमावस्या के उपाय...हरियाली अमावस्या पर पितरों की पूजा करना बेहद शुभ माना जाता है। ऐसे में पितरों को शांत करने और उनका आशीर्वाद प्राप्त करने के लिए आप इस दिन एक आसान उपाय कर सकते हैं। इसके लिए सुबह विधि-विधान से पूजा करने के बाद चींटियों को आटा और चीनी खिलानी चाहिए। ऐसा करने से पितर प्रसन्न होते हैं और उनका आशीर्वाद भी बना रहता है। अगर आप हरियाली अमावस्या पर इस उपाय को करते हैं तो इससे जरूरी कार्यों में आने वाली बाधाएं भी दूर होने लगती हैं और जीवन में सफलता के नए रास्ते नजर आते हैं। साथ ही, इससे जातक को घर की समस्याओं से भी धीरे-धीरे छुटकारा मिल सकता है। सावन में पड़ने वाली इस अमावस्या पर पवित्र नदी में स्नान जरूर करना चाहिए। साथ ही, पितरों की शांति के लिए पितृ गायत्री पाठ, तर्पण विधि, गरुड़ पुराण, पितृ सूक्त पाठ और पितृ देव चालीसा का पाठ करना चाहिए। इसके बाद, विधि-विधान से आरती करें और किसी गरीब या जरूरतमंद व्यक्ति को भोजन अवश्य कराएं। इस उपाय को करने से जातक के जीवन से दुर्भाग्य दूर हो सकता है। साथ ही, जीवन में आने वाली पैसों की तंगी से भी निजात मिलती है और धन-दौलत में वृद्धि होने लगती है। अगर आप हरियाली अमावस्या पर इस उपाय को करते हैं, तो इससे जीवन में खुशहाली दस्तक देने लगती है।इसके लिए हरियाली अमावस्या के दिन शाम के समय एक उपाय कर सकते हैं। पूजा की किसी थाली में ओम बनाएं और पर महालक्ष्मी यंत्र को स्थापित कर दें। इसके बाद, विधि-विधान से यंत्र की पूजा जरूर करें। इस उपाय को करने से माता लक्ष्मी प्रसन्न होती हैं और उनकी कृपा परिवार के सदस्यों पर बनी रहती है। ऐसे में जातक के घर में हमेशा सुख-शांति और समृद्धि बनी रहती है। साथ ही, धन की देवी मां लक्ष्मी का भी घर में वास होता है। जीवन के दुखों से छुटकारा पाने के लिए इस उपाय को हरियाली अमावस्या पर जरूर आजमाकर देखें। हरियाली अमावस्या पर भगवान शिव की पूजा करने का भी खास महत्व होता है। ऐसे में इस दिन शिवजी के मंदिर में जाकर उनके सामने एक दीपक जरूर जलाना चाहिए। साथ ही, मंदिर में बैठकर 'ओम नमः शिवाय' मंत्र का 108 बार जाप जरूर करें। इस उपाय को करने से जातक को भगवान शिव की विशेष कृपा प्राप्त हो सकती है। साथ ही, करियर और नौकरी में आने वाली समस्याओं से छुटकारा मिल सकता है और जीवन में सफलता प्राप्त होती है। हरियाली अमावस्या पर इस आसान उपाय को करने से

आर्थिक राशिफल : सिद्धि योग में भगवान विष्णु रहेंगे मेहरबान, सफलता और धन लाभ के बनेंगे योग

मेष राशि आपके लिए दिन मिला जुला रहने वाला है। व्यापार के मामले में नए संपर्क बनाने से आपका भाग्य बदल सकता है। साथ ही, कार्यस्थल और समाज में आपके मान-सम्मान में वृद्धि होगी। मित्रों के साथ किसी लंबी यात्रा पर जाने का प्लान भी बन सकता है। शादीशुदा लोगों के वैवाहिक जीवन में खुशहाली बनी रहेगी। लेकिन कुछ मामलों में आपको अपने क्रोध पर नियंत्रण रखना होगा।

वृषभ राशि व्यापार के मामले में आपको कोई भी फैसला सोच-समझकर लेना होगा, अन्यथा नुकसान हो सकता है। किसी बात को लेकर मानसिक अशांति महसूस हो सकती है और मन भी बेचैन रहेगा। ऐसे में कोई भी निर्णय जल्दबाजी में न लें। हालांकि, माता-पिता के सहयोग से दिन के अंत तक आपको कुछ राहत महसूस होगी। कार्यक्षेत्र में मधुर वाणी का प्रयोग करना उत्तम रहेगा।

मिथुन राशि आपको व्यापार में छोटे-छोटे लाभ मिलने के योग बने हुए हैं। अगर नौकरी या व्यवसाय से जुड़ी कुछ समस्याएं परेशान कर रहीं थीं, तो अब वे दूर हो सकती हैं या आपको समाधान मिल सकता है। आप अपने छोटे व्यवसाय को अनुभव के साथ बड़ा बना सकते हैं। शाम के समय मित्रों और परिवार में खुशनुमा माहौल बना रहेगा, जिससे आपका भी मन प्रसन्न रहेगा।

कर्क राशि कार्यक्षेत्र में आपके कुछ विरोधी आलोचना कर सकते हैं। लेकिन आपके लिए उन पर ध्यान देने की बजाए अपने काम में लगा रहना ज्यादा बेहतर होगा। खुद के काम में व्यस्त रहने से आपका दिन अच्छा जाएगा। भविष्य में आपको बड़ी सफलता प्राप्त होने के योग भी बन रहे हैं। समाज में भी आप मेलजोल बढ़ाने में सफल रहेंगे।

सिंह राशि आपको कार्यक्षेत्र और निजी जीवन में अपने विरोधियों व शत्रुओं से बचने की जरूरत है। ये आपके खिलाफ कोई योजना बना सकते हैं। ऐसे में व्यापार से जुड़ा कोई भी फैसला सोच-समझकर लेना बेहतर होगा। आपका मन किसी अनावश्यक बात के चलते उदास हो सकता है। लेकिन आपको नई उपलब्धियां प्राप्त करने के लिए कड़ी मेहनत होगी। किसी भी अनजान व्यक्ति से लेनदेन से भी आपको बचना होगा।

कन्या राशि कामकाज के मामले में हर परिस्थिति के लिए तैयार रहने से आपको लाभ

प्राप्त हो सकता है। अगर कार्यक्षेत्र में विपरीत परिस्थितियां उत्पन्न होती हैं तो आपको अपने क्रोध पर नियंत्रण रखना होगा। ऐसा न करने से बात ज्यादा बढ़ सकती है। आपको राजकीय मदद प्राप्त होगी और शाम के समय अचानक लाभ मिलने के योग बन रहे हैं। परिवार में भी खुशनुमा माहौल बना रहेगा और रचनात्मक कार्यों में आपका मन लगेगा।

तुला राशि व्यापार में अगर कोई समस्या चल रही है तो उसका सही समाधान न मिलने से आपका मन परेशान रह सकता है और मानसिक तनाव भी बढ़ेगा। कार्यस्थल पर अपने पद या किसी अधिकार की महत्वाकांक्षा के चलते अन्तर्विरोध देखने को मिल सकता है। व्यापार के मामले में कोई दूर या पास की यात्रा प्रबल होकर स्थिगत हो सकता है। व्यावसायिक समस्याओं और घर में आने वाली परेशानियों के चलते आप चिंता में रह सकते हैं।

वृश्चिक राशि कार्यक्षेत्र में कुछ विशेष काम करने की योजना बना सकते हैं या तैयारी में भी लगे रह सकते हैं। कार्यस्थल पर अधिकारियों से अच्छा तालमेल बना रहेगा। व्यापार के मामले में किसी सरकारी संस्था से आपको बड़ा लाभ मिल सकता है, जिससे मन प्रसन्न रहेगा। लेकिन आपको नकारात्मक विचारों से दूर रहना होगा। शाम तक आपको संतान पक्ष से कोई शुभ समाचार सुनने को मिल सकता है।

धनु राशि अगर आपका धन कहीं रुका हुआ था या देरी हो रही थी तो अब अचानक से सारी बाधाएं दूर हो सकती हैं। साथ ही, आपका पैसा भी वापस मिल जाएगा। धर्म और अध्यात्म में आपका विश्वास बढ़ेगा और आंतरिक सुकून महसूस होगा। रोजमर्रा के कामों में लापरवाही बरतने से बचना होगा। पहले किए हुए किसी निवेश से आपको लाभ मिल सकता है और नए संपर्क से सफलता के रास्ते खुलेंगे।

मकर राशि कार्यस्थल पर अपने वरिष्ठ अधिकारियों से आपकी अनबन हो सकती है। ऐसे में वाणी पर संयम रखें और क्रोध से बचें। आपकी समझदारी और चतुराई से विरोधियों का मनोबल टूटेगा। दिन के समय अचानक घर में मेहमान भी आ सकते हैं जिससे थोड़ा खर्च बढ़ेगा। परिवार में खुशहाली आएगी और जीवनसाथी के साथ रिश्ते मधुर होंगे।

कुंभ राशि आपके लिए दिन में सफलता के अच्छे योग बने हुए हैं। वाहन, या भूमि खरीदने का भी शुभ संयोग बन सकता है। साथ ही, स्थान परिवर्तन की भी संभावना है। आपके सांसारिक सुख में भी वृद्धि होगी। लेकिन कार्यस्थल पर कामकाज में कुछ अस्थिरता देखने को मिल सकती है। घर के लिए जरूरत का सामान खरीदने जा सकते हैं।

मीन राशि किसी प्रतियोगिता में भाग लेने वाले हैं तो आपको उसमें सफलता प्राप्त हो सकती है। व्यापार या नौकरी में किसी खास उपलब्धि के चलते आपका मन प्रसन्न रहेगा और सुकून महसूस होगा। अगर परिवार में संतान से जुड़ी कोई समस्या चल रही थी तो अब उससे भी निजात मिल सकती है, जिससे मानसिक तनाव कम होगा। लेकिन मौसम परिवर्तन के चलते सेहत में उतार-चढ़ाव देखने को मिल सकता है।

सकारात्मक ऊर्जा का स्रोत है आपके घर की बालकनी, इसे नजरअंदाज न करें

घर की बालकनी वास्तुशास्त्र की दृष्टि से महत्वपूर्ण होती हैं, हालांकि उसकी ओर हम ज्यादा ध्यान नहीं दे पाते हैं। अगर बालकनी वास्तुशास्त्र के अनुसार बन पाए एवं उसका रखरखाव भी वास्तु निर्देशों के अनुरूप हो, तो पूरे मकान अथवा फ्लैट को सकारात्मक ऊर्जा का लाभ दिलाने में अहम भूमिका निभाती है। यदि बालकनी पूर्व दिशा में बनी हो, तो यह आपके पूरे घर के लिए लाभदायक है और घर में सकारात्मक ऊर्जा के संचार के लिए इसे सर्वाधिक साफ-सुथरा रखें। इसी दिशा से सुबह के समय सूर्य भगवान की सकारात्मक किरणें आपके घर में प्रवेश करती हैं, अतः यहां बड़ा एवं भारी सामान न रखें। यहां तुलसी का पौधा रखें लेकिन यहां बहुत ज्यादा भारी गमले न रखें। घर का कोई भी टूटा-फूटा सामान, रद्दी आदि यहां न रखें। सूर्य को जल देने के लिए इस बालकनी के लगभग बीच का भाग प्रयोग करें। यदि आपके घर अथवा फ्लैट की पश्चिम दिशा में बालकनी हो, तो इसे दोपहर के बाद परदे से थोड़ा-बहुत कवर कर लेना चाहिए, क्योंकि वास्तु के अनुसार पश्चिम की दिशा से क्षीण या नकारात्मक ऊर्जा ही प्रवेश करती है। जब उत्तर दिशा में हो बालकनी- यदि आपके मकान अथवा फ्लैट की बालकनी उत्तर दिशा में बनी हो तो इसे भी पूर्व

दिशा की बालकनी के समान साफ-सुथरा रखें। यदि निर्माणाधीन मकान में आपकी पसंद के अनुसार, बालकनी बनाने की आपको स्वतंत्रता हो, तो पूर्व, उत्तर एवं पूर्वोत्तर के ईशान कोण में बड़ी बालकनी का बनाना वास्तु सम्मत है, ऐसी बालकनी भवन को विस्तृत आधार एवं सकारात्मक ऊर्जा देती है। यदि बालकनी मकान या फ्लैट की दक्षिण दिशा में बनी हो, तो यहां ऊंची और लटकने वाली विभिन्न प्रकार के फूलों वाली या सजावटी बेलें लगाएं। दक्षिण दिशा की बालकनी के एक हिस्से में आप कुछ ऐसे ही सामान रख सकते हैं, जिनका इस्तेमाल आपको फिलहाल नहीं करना होता। यदि दक्षिण दिशा की बालकनी वाला भाग मकान का फ्रंट या आगे वाला भाग बनता हो, तो इस बालकनी को आकार में अपेक्षाकृत बड़े पौधों से सजाया जा सकता है। बालकनी चाहे किसी भी दिशा में बनी हो, हमेशा साफ-सुथरी होनी चाहिए, क्योंकि प्रायः वहां एक या एक से अधिक खिड़कियां और दरवाजे भी होते ही हैं और ब्रह्मांडीय ऊर्जा हमेशा घर की खिड़कियां और दरवाजों के रास्ते ही घर में प्रवेश करती है। अब यदि ऊर्जा के प्रवेश करने का मार्ग ही साफ-सुथरा न हो, तो नकारात्मक तरंगें ही हमारे घर में आएंगी, जिससे घर में अशांति का वातावरण बन सकता है।

24 घंटे में 35 एमएम बारिश क्षेत्र में हुई दर्ज

सतपुड़ा जलाशय के एक गेट से 850 क्यूसेक पानी छोड़ा जा रहा

दैनिक कारखाने का सफर। सारनी

मंगलवार और बुधवार से हो रही बारिश की वजह से सतपुड़ा जलाशय के एक गेट एक फिट पर सुबह से खोल कर रखा गया है। जिसकी वजह से पर सेकंड 850 क्यूसेक पानी सतपुड़ा जलाशय से छोड़ने का काम किया जा रहा है। 24 घंटे में 34 एमएम बारिश क्षेत्र में दर्ज की गई है। जबकि 16 जून से लेकर अभी तक क्षेत्र में 562 एमएम बारिश हो चुकी है बारिश को अभी दो माह का समय बाकी है। जलाशय प्रबंधन के माध्यम से पानी के लेवल को लेकर चलने का कार्य कर रहा है।

बैतूल के चिरमा टेकरी में उल्टी-दस्त से दो की मौत

दैनिक कारखाने का सफर। बैतूल

बैतूल जिले के शाहपुर ब्लॉक स्थित चिरमा टेकरी गांव में उल्टी-दस्त की बीमारी से एक हफ्ते में दो लोगों की मौत हो गई। स्वास्थ्य विभाग की टीम ने गांव में 22 बीमार लोगों की पहचान की है। हालात की गंभीरता देखते हुए बुधवार को CMHO खुद मौके पर पहुंचे और स्थिति का जायजा लिया।मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी डॉ. मनोज हुरमाड़े, DHO राजेश परिहार के साथ एपेडेमियोलॉजिस्ट मोहसिन खान, BMO शाहपुर और अन्य अधिकारी गांव पहुंचे। मृतकों के परिजनों से मुलाकात कर संवेदना जताई गई और बाकी मरीजों का मौके पर ही इलाज शुरू हुआ। गांव में कुल 22 बीमार लोग मिले, जिनमें से 3 को दस्त और 2 को उल्टी की शिकायत के चलते शाहपुर सीएचसी में भर्ती किया गया है। वहीं 2 मरीजों को बुखार, 4 को सर्दी और 6 को पेट दर्द की समस्या थी। पेयजल की गुणवत्ता की जांच के लिए पीएचई और खाद्य विभाग की टीम ने पानी के स्रोतों से सैंपल लिए और उन्हें वायरोलॉजी लैब भेजा है। गांव में पानी से संक्रमण की आशंका को देखते हुए सतर्कता बरती जा रही है। फिलहाल गांव में सेक्टर सुपरवाइजर, ANM और CHO की ड्यूटी लगाई गई है। ये टीम अगले कुछ दिनों तक गांव में ही रहकर लोगों की निगरानी करेगी और बीमारों का इलाज करती रहेगी। स्थानीय प्रशासन ने आश्वासन दिया है कि स्थिति पर पूरी निगरानी रखी जा रही है और बीमारी को फैलने से रोकने के लिए आवश्यक कदम उठाए जा रहे हैं। टीम ने घर जाकर जांच की है।

बैतूल-आमला सड़क पर अटका निर्माण शुरू हुआ

प्रशासन ने जेसीबी से हटाया अतिक्रमण, जल्द 200 मीटर सड़क बनेगी

दैनिक कारखाने का सफर। बैतूल

बैतूल-आमला के बीच बन रही 28 किमी टू-लेन सड़क के अधूरे हिस्से को लेकर बरसाली गांव में उपजा विवाद बुधवार को प्रशासन की तत्परता से सुलझ गया। कलेक्टर नरेंद्र सूर्यवंशी के निर्देश पर प्रशासनिक टीम मौके पर पहुंची और जेसीबी से अतिक्रमण हटाकर निर्माण कार्य शुरू कराया। बरसाली गांव के पास करीब 200 मीटर हिस्से पर एक किसान के भूमि स्वामित्व को लेकर आपत्ति के चलते निर्माण रुका था। मंगलवार को ग्रामीणों ने चेतावनी दी थी कि 25 जुलाई से सड़क बंद कर खुद निर्माण करेंगे। इसके बाद बुधवार सुबह एसडीएम मकसूद अहमद, पीडब्ल्यूडी की कार्यपालन यंत्री प्रीति पटेल, तहसीलदार गोवर्धन पाठे, एसडीओपी सुनील लाटा और राजस्व व पुलिस अमला मौके पर पहुंचा।

प्रशासन ने विवादित भूमि का सीमांकन कर पत्थर गाड़े और सड़क के लिए रास्ता खाली कराया। टीम ने जेसीबी से अतिक्रमण हटवाया और निर्माण कार्य दोबारा शुरू कराया। साथ ही बारिश से खराब हो चुके सड़क हिस्से की भी मरम्मत की गई। ग्रामीणों का आरोप है कि विभाग ने प्रभावशाली लोगों के दबाव में सड़क की दिशा बदल दी। वहीं प्रशासन ने स्पष्ट किया कि सड़क निर्माण की प्रक्रिया वैधानिक है और इसमें किसी प्रकार का भेदभाव नहीं किया गया। प्रशासन ने स्पष्ट चेतावनी दी है कि निर्माण कार्य में बाधा डालने वालों पर सख्त कार्रवाई की जाएगी।

बगडोना के जाहन्वी रिजॉर्ट संगीत संध्यासांस्कृतिक मंच के

एक दिन बिक जायेंगे माटी के मोल गीतों के माध्यम से मुकेश माथुर को किया याद

दैनिक कारखाने का सफर। सारनी

जिस गली में तेरा घर ना हो बालमा,जो तुमको हो पसंद वही बात करेंगे,तेरे होठों के दो फूल प्यारे-प्यारे,जब तुम्हारा कोई हृदय तोड़ दे जैसे एक से बढ़कर एक गीतों की प्रस्तुति देकर मुकेश कुमार का जन्मदिन क्षेत्र के गायों को के माध्यम से मनाने का कार्य किया गया। कार्यक्रम का आयोजन बगडोना के जाहन्वी रिजॉर्ट में संगीत संध्यासांस्कृतिक मंच के तत्वाधान में आयोजित किया गया। संध्या सांस्कृतिक मंच के मनोज भट्टाचार्य ने जानकारी देते हुए बताया कि मुकेश कुमार माथुर,जिन्हें आमतौर पर मुकेश के नाम से जाना जाता है,एक प्रसिद्ध भारतीय पार्श्व गायक थे। उनका जन्म 22 जुलाई 1923 को दिल्ली में हुआ था। उनके जन्म जयंती के पावन अवसर को देखते हुए संगीत संध्या सांस्कृतिक मंच के तत्वाधान में सदी के महान मुकेश कुमार माथुर जी का जन्म दिवस मनाया गया उन्होंने जानकारी देते हुए बताया कि मुकेश के सर्वश्रेष्ठ गानों की सूची में मैंने तेरे लिए, कभी कभी मेरे दिल में,कहीं दूर जब दिन ढल जाए,रमैया वस्तावैया,सुहाना सफर और ये मौसम,दिल की नजर से,एक प्यार का नगमा है,हमको तुमसे हो गया है प्यार,क्या खूब लगती हो,सावन का महीना,दम दम डिगा डिगा और भी कई जीत उनके नाम शामिल है।इस संगीतमय कार्यक्रम में क्षेत्र के अनेकों कलाकारों ने हिस्सा लिया कार्यक्रम में मुख्य अतिथि डब्ल्यूसीएल के ई-एडम मुख्य प्रबंधक अविनाश दास जी रहे कार्यक्रम मैं मुकेश जी को याद कर उनके सु-मधुर गीतों को गाकर उन्हे अपने हृदय की गहराइयों से याद किया गया और उन्हें अपने गीतों के माध्यम से श्रद्धांजलि अर्पित की कार्यक्रम जाहन्वी रिजॉर्ट बगडोना में संपन्न हुआ। इस संगीत कार्यक्रम में मुख्य रूप से ललित मालवीय,देवेंद्र भादे,रंजीत कुमार झा,विनोद मंद्रे,मनोहर डोंगरे, दिलीप पुआर,कश्मीरा सिंह, विनय जैन,रीना चौकीकर आदि गायको ने एक से एक शानदार गीतों की प्रस्तुति देने का कार्य किया है।

आज किया जाएगा अंतिम संस्कार, डब्ल्यूसीएल के पूर्व ठेकेदार राजेंद्र सिंह का हुआ निधन

दैनिक कारखाने का सफर। सारनी

वेस्टर्न कोलफील्ड लिमिटेड पाथाखेड़ा के पूर्व ठेकेदार राजेंद्र सिंह का बुधवार को सुबह 8 बजे के लगभग में निधन हो गया है। जिनका अंतिम संस्कार शोभापुर कॉलोनी के मोक्षधाम में गुरुवार को 10 बजे किया जाएगा।स्व.राजेंद्र सिंह क्षेत्र के समाजसेवी एवं ठेकेदार संजीव सिंह उर्फ मुन्ना भैया के पिताजी हैं। क्षेत्र के पुराने लोगों का बताना है कि सन 1963 में बिहार के गया जिले से (वर्तमान समय में औरंगाबाद) रोजगार की तलाश में आए थे और उसे समय एनसीडीसी के नाम से क्षेत्र को जाना जाता था उसे समय भूमिगत खदान में उनके द्वारा ठेकेदारी का कार्य किया जाता था। संपूर्ण क्षेत्र में ठेकेदार राजेंद्र बाबू के नाम से व्याख्या थे लंबी बीमारी के दौरान उनका आकस्मिक बुधवार को बगडोना के गर्ग कॉलोनी में उनका निधन हो गया है।उनके निधन के बाद उनके करीबी एवं क्षेत्र में गमगीन माहौल बना हुआ है।स्व. राजेंद्र सिंह ने अपने पीछे भरपुर परिवार छोड़ गए हैं।

रोज़गार-आधारित शिक्षा रुझान एवं नए अवसर, विकसित मध्य प्रदेश 2047 का सीधा प्रसारण

दैनिक कारखाने का सफर। बैतूल

सारनी। शासकीय महाविद्यालय बगडोना सारणी में एक दिवसीय रोजगार आधारित शिक्षा रुझान पर कार्यशाला का आयोजन सीधे प्रसारण के रूप में आयोजित हुआ।शासकीय महाविद्यालय के प्राचार्य प्रदीप पंद्राम ने बताया कि वीर स्वतंत्रता संग्राम सैनानी सरदार विष्णु सिग उइके शासकीय महाविद्यालय बगडोना (सारनी) में विकसित मध्यप्रदेश @2047:रोज़गार-आधारित शिक्षा : रुझान एवं नए अवसर"पर एक दिवसीय राष्ट्रीय कार्यशाला का महाविद्यालय में सीधा प्रसारण का आयोजन किया गया।इस कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य छात्रों को भविष्य में रोजगार के अवसरों और आवश्यक कौशल के बारे में सलाह देना था। विकसित मध्यप्रदेश @2047' के लक्ष्य को प्राप्त करने में युवा शक्ति और कौशल विकास का महत्व बताया गया।कार्यक्रम में महाविद्यालय के प्राचार्य प्रदीप पंद्राम के साथ सभी सहायक प्राध्यापकगण एवं विद्यार्थी ने कार्यक्रम मैं उपस्थित रहकर शासन की योजना और कार्यक्रम से लाभान्वित हुए।

स्वामी, प्रकाशक एवं मुद्रक मधुवर मोहन द्विवेदी द्वारा इंडिपेंडेट प्रेस, 11 प्रेस काम्पलेक्स, एमपी नगर जोन-1 भोपाल 462023 म.प्र. से मुद्रित एवं 201 ब्लाक ई, सागर प्रीमियम टावर जेके हॉस्पिटल, कोलार रोड, भोपाल म.प्र. से प्रकाशित। (सभी विवादों का न्याय क्षेत्र भोपाल न्यायालय रहेगा) संपादक- सुनील यादव, समाचार संपादक- राहुल कौशिक। फोन नं. 0755-4262585-9425006706, मो. नंबर 9826697203, 9926288166, RNI.No. MPHIN/2020/78949